

-मनोबल द्वारा अमीर बने

-मेहनत की चीजे अच्छी लगती हैं ।

-हमारे सामने दो विकल्प है । या तो हम खुद को बदले या फिर दूसरे हमें बदले । विकल्प हमारे हाथ में है । हम विकास करने से इनकार कर सकते है । हम टी वी देखने और रेडियो सुनने में अपना समय बर्बाद कर सकते है । हम मौखिक संस्कृति का चुनाव कर सकते है ।

-दूसरी तरफ हम अपना विकास कर सकते है, अपना समय पढ़ने में लगा सकते है और अपनी पूरी मानसिक क्षमता को सक्रिय कर सकते है ।

-आप को ऐसे खास पलों का अनुभव हुआ होगा, जब लिखित शब्द से हमारा तुरंत कायाकल्प हुआ है । ज्ञान के ये पल हमें विकास की ओर बढ़ाते है ।

-ये ऐसे ही है जैसे कोई पौधा जमीन के अंधकार से फूटता है और धूप की ओर उपर उठता है ।

-हम सभी ने कोई ना कोई ऐसी चीज़ पढी है, जो इतनी मर्मस्पर्शी या इतनी ज्ञानवर्धक थी कि उसने संसार को देखने के हमारे दृष्टिकोण को तत्काल बदल दिया ।

-यह पढ़ने की छिपी शक्तियों में से एक है । यह हमें रूपान्तरित कर सकती है और हम कुछ मिनट पहले जैसे थे, उस से भिन और बेहतर बना सकती है । जब हम बेहतर बन रहे है तो हम अधिक समृद्ध बन रहे है ।

-पढ़ना दिमाग के लिये वैसा ही है, जैसे शरीर के लिये व्यायाम ।

-जब आप पढ़ते है तो समय और प्रयास का एक बड़ा हिस्सा निवेश कर रहे होते है । इसी निवेश के कारण अध्ययन एक अमूल्य निधि है ।

-जब हम टी वी देखते हैं तो हमें अपनी कल्पना का बहुत ज्यादा प्रयोग करने की जरूरत नहीं होती । हिलती तस्वीरें और आवाज़ हमारी इन्द्रियों को भर देती है और हमारी मानसिक सहभागिता को कम कर देती है । टी वी एक ऐसा माध्यम है जो हमें निष्कृत होने के लिये प्रेरित करता है ।

-पढ़ते समय हम मानसिक चित्र बनाते हैं । हम गति को नियंत्रित करते हैं । हम रुक कर पढ़ते हैं । हम अपनी जानकारी को ध्यान में रखते हुये नई जानकारी की कसौटी पर कसते हैं । जिस तरह कुम्हार मिट्टी को आकार देता है, उसी तरह दिमाग पुस्तक की सामग्री को आकार देता है, जिसे हम पढ़ रहे हैं । हम कुछ हिस्सों पर ज्यादा दबाव डालते हैं । जब की कुछ को हम धीरे से चिकना करते हैं ।

-जिन चीजों को हम मेहनत और अपनी कमाई से खरीदते हैं उन की बहुत प्रवाह करते हैं । हम उसी को महत्व देते हैं जिसके लिये मेहनत करते हैं ।

-यही अध्ययन में निवेश करने के बारे में कहा जा सकता है ।

-पढ़ने में मेहनत लगती है । ध्यान केन्द्रित करना पड़ता है । हमें प्रयास करना पड़ता है । जो पढ़ कर सीखते हैं उसे स्वाभाविक रूप से महत्वपूर्ण समझते हैं क्योंकि उसमें अधिक मानसिक निवेश किया है । जिस का परिणाम हमें भरपूर धन मिलता है ।

आन्तरिक बल -422

-मनोबल द्वारा अमीर कैसे बने -17

-आप वही हैं जो आप पढ़ते हैं ।

-टी वी देखने या ऑडियो टेप सुनने के बजाय पुस्तक पढ़ने के बाद ज्यादा संतुष्टि महसूस होती है ।

-हम कोई पुस्तक पढ़ते हैं तो यह हमारी हो जाती है, क्योंकि हम ने अपनी मेहनत से इसे अर्जित किया है । उसका संदेश भी मस्तिष्क में ज्यादा समय तक रहता है ।

-विश्व की पूरी मानवता जानकारी एकत्रित करने के लिये पढ़ने को जितना महत्व देती हैं उतना किसी दूसरे मध्यम को नहीं देती ।

-पढ़ना वह करघा है, जिसमें हमारे आन्तरिक वस्त्र बुने जाते हैं । घटिया सामग्री पढ़ने से मस्तिष्क और हृदय दोनों के ही वस्त्र घटिया होते हैं ।

-मित्रों की ही तरह, पुस्तकों का चयन भी एक गम्भीर कर्तव्य है । उसके बारे में भी हम उतने ही जिम्मेवार हैं, जितने इस बारे में की हम क्या करते हैं ।

-यदि आप नाकारात्मक, घटिया भाषा और संसार के प्रति आलोचनात्मक दृष्टिकोण ग्रहण करते हैं, तो उसी के अनुसार बोलेंगे और करेंगे । आप वैसे ही हैं जैसा आप देखते हैं । आप वैसे ही हैं , जैसा आप सुनते हैं, आप वैसे ही हैं, जैसा आप पढ़ते हैं ।

-भविष्य का निरक्षर वह नहीं होगा, जो पढ़ नहीं सकता । यह तो वह होगा, जो यह नहीं जानता की सीखा कैसे जाता है ।

-यदि आप सफल होना चाहते हैं तो आप को वह करना होगा, जो सफल लोग करते हैं । और सफल लोग जो काम करते हैं, उसमें से एक हैं पढ़ना और दूसरा अमीर बनना ।

-यदि आप हर दिन सिर्फ 15 मिनट पढ़ें तो 10 वर्ष की अवधि में 120 पुस्तकें पढ़ सकते हैं ।

-परिस्थियों को बदलने के लिये स्वयं को बेहतर बनाना पड़ता है । खुद को बेहतर बनाने के लिये आप को बदलना पड़ता है । खुद को बदलने के लिये पुस्तकें पढ़नी पड़ती है ।

-व्यक्तिगत विकास की पुस्तकों को विभिन्न नामों से जाना जाता है, जैसे - प्रेरक पुस्तकें, स्व सहायता पुस्तकें, आत्मा सुधार की पुस्तकें, लोक व्यवहार की पुस्तकें आदि आदि ।

-एक अच्छी पुस्तक ही महान व्यक्ति की सफलता की नींव है ।

-इसलिये शक्ति प्रदान करने वाली पुस्तकें पढ़ें जो आप के दिल की गहराई में जा कर किसी उद्देश्य को जागृत कर दें । ऐसी पुस्तकें पढ़ें, जो आप को संकल्प लेने और थोड़ा बेहतर बनने के लिये प्रेरित करें, थोड़ी ज्यादा मेहनत करने और संसार में कुछ करने के लिये प्रोत्साहित करें ।

-हर दिन 15 मिनट के एकाग्र अध्ययन से आप लगभग पाँच वर्षों में महान लेखकों को पढ़ लेंगे ।

-याद रखें जब आप पढ़ते हैं और पढ़ना जारी रखते हैं तो आप प्रगति कर रहे हैं । अमीर बन रहे हैं ।

आन्तरिक बल 424

-मनोबल द्वारा अमीर बने -19

-विचार ही धन है

-हमारे विचार ही आर्थिक उन्नति या आर्थिक कमी का कारण बनते हैं ।

-हम कोई भी विचार करते हैं । वह कभी भी नष्ट नहीं होता है । यदि कहीं धरती के नीचे कुँ में बैठ कर विचार करते हैं, वह एक तो जिसके बारे में सोचते हैं उस तक पहुँचते हैं, उसे सुखी या दुखी करते हैं , दूसरा हमारी आर्थिक स्थिति को भी प्रभावित करते हैं ।

-ये विचार प्रत्यक्ष रूप में नहीं दिखते परंतु अप्रत्यक्ष रूप से धन प्रभावित करते हैं ।

-हम किसी विचार को गोपनीय नहीं रख सकते । कोई भी विचार जल्द ही आदत में ढल जाता है और आदत साकार हो कर परिस्थिति में दिखाई देने लगती है ।

-पाशविक विचार शराब और भोग विलास की आदतों में ढल जाते हैं । बाद में ये आदतें गरीबी और रोग की परिस्थितियों में दिखाई देने लगते हैं । जिस का आर्थिक स्थिति पर गहरा प्रभाव पड़ता है । क्योंकि भोगों और बीमारियों पर बहुत खर्च होता है जिस से हमारी जेब पर असर पड़ता है । बीमारी आदि होने पर हम काम धंधे भी अच्छी तरह नहीं कर सकते जिस का आर्थिक स्थिति पर सीधा असर होता है ।

-सभी प्रकार के अशुद्ध विचार कमजोर और दुविधापूर्ण आदतों में ढल जाते हैं । बाद में ये आदतें विचलित करने वाली तथा विपरीत परिस्थितियों में दिखाई देने लगती हैं ।

-डर, शंका और अनिर्णय के विचार कमजोर, नर्म वा अनिच्छित आदतों में ढल जाते हैं । फिर यही आदतें दरिद्रता और दासपूर्ण निर्भरता की परिस्थितियों में दिखाई देने लगती हैं। दास व्यक्ति को बहुत कम तनख्वाह मिलती है । उनका जीवन दुखों में बीतता है ।

-आलसी विचार, बेईमानी के विचार हमें गलत राह पर चलने के लिये मजबूर करते हैं । अंत में ये विचार घृणा और भिखमगे के रूप प्रकट हो जाते हैं । ये जितने भी भिखारी हैं इस का कारण आलस्य है ।

-नफरत और निन्दा के विचार आरोप तथा हिंसा की आदतों में बदल जाते हैं बाद में ये आदतें चोट और उत्पीड़न में दिखाई देने लगती हैं । हिंसा की आदत मनुष्य को मुकदमों में डाल देती है । मुकदमे धन को बर्बाद कर देते हैं । ये जितने भी लोग जेल में सजा काट रहे हैं उसकी जड़ ये नफरत के विचार ही हैं ।

-सभी प्रकार के स्वार्थपूर्ण विचार अपनी स्वार्थपूर्ति की आदतों में ढल जाते हैं बाद में ये आदतें कमोबेश कष्टकारी परिस्थितियों में दिखाई देने लगते हैं । सम्बन्धों में खटास आ जाता है । घर के लोग एक दूसरे को सहयोग नहीं करते । भोले व्यक्ति सब कुछ लूटवा बैठते हैं और जब उन्हें समझ आती है वह कुछ कर नहीं सकते । उन्हें घोर वित्तीय संकट का सामना करना पड़ता है ।

-यह संसार में जहां कहीं भी शोषण हो रहा है, भाई भाई का दुश्मन बना हुआ है, कर्मचारियों और नियोक्ता में संघर्ष है, धार्मिक संस्थाओं का पतन हो रहा है उसका मूल कारण स्वार्थ के विचार ही हैं ।

-जहां कहीं भी भुखमरी है, संसाधनों की कमी है उसकी जड़ में किसी ना किसी के स्वार्थी विचार ही हैं ।

-इसलिये जब भी कोई व्यर्थ संकल्प आये उसे तुरंत बदल दो उसका विपरीत पॉज़िटिव विचार चलाओ ।

--मनोबल द्वारा अमीर बने -18

-धन के प्रति बुरी भावनाये

-यदि आप के जीवन में पैसा सतत रूप से प्रवाहित नहीं हो रहा, तो यह जान ले कि ज़रूर कोई ना कोई चीज़ बहुत गड़बड़ है ।

-यदि कोई व्यक्ति चरित्र विरोधी, परिवार विरोधी, समाज विरोधी, सरकार विरोधी या भगवान विरोधी कार्य कर रहा है या किसी भी नशीले पदार्थ का पियकड़ है या किसी विपरीत लिंग के आकर्षण में डूबा/फंसा है उसकी आर्थिक स्थिति कभी अच्छी नहीं हो सकती ।

-ईश्वर का ऐसा कोई इरादा नहीं था कि लोग गरीब रहे । दर असल जब हम मानसिक शक्तियों को बुरी सोच, बुरे कामों में लगाते है तो धन का अकाल पड़ने लग जाता है ।

-यदि आप दूसरो का शोषण करके या अन्याय पूर्ण तरीके से दौलत हासिल करने लगते है तो आप अपनी मानसिक शक्तियों का द्रुपयोग कर रहे है । ऐसे लोगों के घर में शांति नहीं रहती ।

-कई लोगों के पास अधिक धन नहीं होता । इसका एक कारण यह भी है कि वे मन ही मन या खुलेआम इसकी निन्दा करते है । वे धन को, गंदा धन कहते है, या कहते है पैसे से प्यार करना ही सारी बुराइयों की जड़ है ।

-याद रखो आप जिस से घृणा करते है, उसका आनंद नहीं ले सकते । आप जिस की निंदा करते है उसे खो बैठते है । धन के सच्चे महत्व को देखना शुरू करो ।

-वह आदमी बेइमानी से काम करता है, यह भ्रष्टाचारी है । इसके पास फूटी कौड़ी नहीं थी । इस तरह की बातें करने वाला व्यक्ति आमतौर पर अभावग्रस्त रहता है या किसी ना किसी आर्थिक या शारीरिक रोग का शिकार हो जाता है ।

-ऐसा इसलिये होता है क्योंकि वह दूसरे व्यक्ति के धन से मन ही मन ईर्ष्या कर रहा है ।

-चिंता, नफरत, डर, तनाव और निन्दा केवल बाहर दिखने वाले अवगुण नहीं हैं, दरअसल इसकी जड़ तो मन में बहुत गहरी जा चुकी होती है बाहर तो बहुत देर बाद ये लक्षण दिखने लगते हैं ।

-हम अपनी ऊर्जा को जहां लगाते हैं उसी का निर्माण होने लगता है । वर्तमान बचकानी मनोदशाये - क्रोध, चिंता और डर से इस बात की पुष्टि करती है कि जन्मों जन्मों तक गरीबी झेली हुई है और धन विरोधी भावनायें रखी गई हैं, जैसे दाल रोटी खाओ और प्रभु के गुण गाओ ।

-हमारा भाग्य हमारे विचार के साथ बदलता है । हम जो बनना चाहते हैं, वह तब बन पायेंगे, हम जो करना चाहते हैं वह तब कर पायेंगे, जब हमारा विचार आदतन हमारी इच्छा के अनुरूप बन जायेगा ।

-इसलिये अपने विचारों पर नज़र रखे । आन्तरिक घृणा जो आप के अन्दर है उसी से आप को चोट पहुंचती है । कई प्रकार की सूक्ष्म चोटें आप को कमजोर करती हैं, उसका प्रकट रूप आलस्य है । आलस्य ही आर्थिक कमी का आधार बनता है ।

आन्तरिक बल 425

-मनोबल द्वारा अमीर बने - 20

-जब हम कोई भी संकल्प चाहे अच्छा चाहे बुरा लम्बे समय तक दिमाग में रखते हैं तो उसका असर परिस्थितियों या चरित्र के रूप में दिखाई देगा ।

-हम सीधे सीधे तो परिस्थितियों को नहीं चुन सकते लेकिन हर परिस्थिति में अपने विचारों को चुन सकते हैं ।

-इस तरह हमारी परिस्थिति चाहे कैसी हो हम अपने संकल्प बदल कर उसे मनचाहा रूप दे सकते हैं ।

-यदि आपने कभी आर्थिक समस्यायें झेली हों, तो उन के बारे बात ना करें । आपने माता पिता की गरीबी या आपने शुरुआती जीवन के कष्टों के बारे में बात न करें ।

-इन में से एक भी चीज़ करने पर आप कुछ समय के लिये खुद को मानसिक रूप से गरीबी की श्रेणी में रख देते हैं । इस से जो सकारात्मक चीजे आप में आ रही हैं वे रुक जायेंगी ।

-ऐसी पुस्तकें न पढ़ें जो आप को बताती हैं की संसार जल्द ही खत्म होने वाला है ।

-उन निराशावादी लोगों की पुस्तकें भी ना पढ़ें कि संसार नरक/शैतान की ओर जा रहा है । दरअसल संसार तो स्वर्ग की ओर जा रहा है ।

-कुछ देशों या स्थानों की स्थितियां चाहे कितनी भयंकर हो, उन पर विचार कर के आप अपना समय क्यों बरबाद कर रहे हैं, और खुद की सम्भावनाओं को नष्ट कर रहे हैं । आप को तो संसार के अमीर बनने में रुचि लेनी चाहिये ।

-अमीर बनने में दुनियां की सहायता करने का एक मात्र उपाय खुद अमीर बनना है ।

-अपना पूरा ध्यान अमीर बनने पर लगा दें । गरीबी को नज़र अंदाज़ कर दें ।

-जब भी गरीब लोगों के बारे बोलें या सोचें तो उन पर तरस खाने के बजाय, इस तरह बोलें जैसे वह अमीर बन रहे हों ।

-विचार अपने समान विचारों को आकर्षित करते हैं । यदि आप मन में गरीबी के विचार रखते हैं तो आप गरीबी को आकर्षित कर रहे हैं ।

-यदि आप मन में ठान लेते हैं कि आप दौलतमंद बन रहे हैं तो आपके यह विचार अपने चारों ओर की परिस्थितियों को अपनी ओर खींच लेंगे और आप के धन में बढ़ोतरी होने लगेगी ।

-दौलत हासिल करने का पहला और आखिरी क़दम खुद को अच्छे प्रभावों से घेरे रखना है ।
अच्छे प्रभाव यानी अच्छे विचार, अच्छा स्वास्थ्य, अच्छा घरेलू और व्यवसायिक परिवेश तथा सफल व्यवसायिक सहयोगी ।

-हर वैध तरीके से प्रतिभाशाली लोगों से परिचय बढ़ाये ।

-अपने व्यवसायिक विचारों को उनके विचारों के सामंजस्य में लायें ।

-इस से आपकी सोहबत रुचिकर होगी और लोग आपके आसपास रहना चाहेंगे ।

-आपके दिमाग में कहीं ना कहीं वह ऊर्जा है, जो आप को लीक से बाहर निकालेगी और सफलता के शिखर पर पहुँचा देगी । बस आप उस ऊर्जा का प्रयोग करना सीख लें ।

-आपके इंजन का पेट्रोल आपकी कार को तब तक नहीं बढ़ायेगा जब तक इग्निशन से निकली एक चिंगारी इसे प्रेरित ना कर दे ।

-ठीक यही आपके दिमाग के साथ होता है । आशा, आत्मविश्वास और संकल्प से ही वह चिंगारी मिलती है, जो आपकी ऊर्जा को सक्रिय करती है ।

आन्तरिक बल -426

-मनोबल द्वारा अमीर बने -21

-संसार में सबसे मुश्किल काम कौन सा हैं ?

-सदा और लगातार मन में श्रेष्ठ संकल्प, उत्साह के संकल्प, स्नेही संकल्प चलते रहें, यह सब से मुश्किल काम हैं ।

- इस जगत की हर चीज़, देखने वाले के मन में अपने अनुरूप आकार उत्पन्न कर देती हैं ।

-आप गरीबी के माहौल में हो, तब भी आप के मन में खुशहाली के विचार चलते रहें । जब आप में यह दृढ़ता आ जायेगी तब आप हर मनचाही चीज़ प्राप्त कर सकते हैं ।

-प्रत्येक वस्तु विचार तत्व से बनी हुई हैं । हर विचार एक आकार ले लेता है ।

-इसलिये अपने विचारों की छाप इस प्रकार छोड़े कि वह हमारी मनचाही वस्तुओं में बदल कर स्थूल जगत में आ जाये ।

-कलयुगी संसार कहता है कि सफलता पाने जे लिये दूसरो को कुचलना या लांघना होगा, तो इस बात पर बिलकुल यकीन ना करें ।

-जो लोग इस सिधांत पर चलते है वह एकाकी हो जायेंगे, वह पुकारेंगे परंतु उनकी कोई आवाज़ नहीं सुनेगा ।

-इस बात से न घबरायें ना डरें कि देखते ही देखते भृष्ट वा बेईमान समूह पूरी धरती के स्वामी बन जायेंगे ।

-दूसरो के प्रति प्रेमपूर्ण भावनायें रखो तो समृद्धि आपको खोजते हूये आप के द्वार तक आयेगी ।

-आमतौर पर लोग उतना ही न्यूनतम कार्य करते है जितने से काम चल जाये । आप पायेंगे कि ऐसे व्यक्ति को हकीकत में इतना ही धन मिल रहा है जिस से उसका सिर्फ काम चल रहा है उन्हे कोई दूसरी चीज़ भी नहीं मिल रही है ।

-न्यूनतम काम दर्तशाता है कि आप के मन में दूसरो के प्रति बहुत कम प्रेम है ।

-आप के मन में जितना ज्यादा प्रेम है आप अपना काम उतने ही बेहतर ढंग से करते है, तथा उतना ही ज्यादा निपुण बनते है और समय के साथ इतने आदर्श बन जाते है कि आप के क्षेत्र में आप की टक्कर के बहुत कम लोग होंगे या कोई दूसरा होगा ही नहीं। तब आप के पास धन भी बेशुमार होगा ।

-याद रखो दूसरो के प्रति प्रेम ही धन है ।

आन्तरिक बल -429

-मनोबल द्वारा अमीर बने -24

-राय

-अमीर बनने में असफलता का एक कारण हैं, व्यक्ति दूसरो के विचारों से आसानी से प्रभावित हो जाते हैं । वे अपने लिये सोचने का काम अखबारों और गपछप करने वाले पडोसीयों पर छोड़ देते हैं ।

-उन्हे यह अहसास ही नहीं होता कि राय दुनियां की सब से सस्ती वस्तु है ।

-इस संसार में हर व्यक्ति के पास राय का भंडार भरा होता है, जिसे राय स्वीकार करने वाले आदमी पर बिना किसी देरी के थोप दिया जाता है ।

-अगर निर्णय पर पहुंचते वक्त आप दूसरो की राय से प्रभावित होते हैं अपनी इच्छा को धन में रूपान्तरित करने की बात तो छोड़ ही दो , आप किसी काम में सफल नहीं हो पायेंगे ।

-यदि आप दूसरो की राय से प्रभावित होते रहते हैं तो आप की स्वयं की कोई इच्छा नहीं होगी ।

-अपने निर्णय खुद ले और उनका अनुसरण करते हुये अपने परामर्शदाता भी स्वयं ही बने ।

-अपने समान विचारो वाले सहयोगियों के सिवा किसी से राय नहीं लें । अपने सहयोगी समूह के लोगों को चुनने में भी बेहद सतर्क रहें ।

-इसमे केवल उन्ही लोगों को शामिल करें जो आप के लक्ष्य के प्रति पूरी सहानुभूति और सामंजस्य रखते हो ।

-करीबी मित्र और रिश्तेदार अनजाने में ही अक्सर अपनी नाकारात्मक राय से और कई बार हंसी उड़ा कर आपको नुकसान पहुंचाते हैं ।

-हजारों स्त्री पुरुष जीवन भर हीन भावना का बोझ सिर्फ इसलिये ढोते रहते हैं, क्योंकि किसी नज़दीकी आदमी ने अपनी राय या हंसी से उनके आत्मविश्वास को कुचल कर रख दिया ।

-आप के पास खुद का दिमाग है । उसका इस्तेमाल करें और अपने निर्णयों पर खुद पहुंचें ।

-अगर आप को निर्णय पर पहुंचने के लिये दूसरो से जानकारी या तथ्यों की आवश्यकता है, जो कई मामलों में होगी, तो चाही गई जानकारी या तथ्य शांति से हासिल कर लें लेकिन अपना उद्देश्य प्रकट ना करें ।

-मुसीबत के समय राय लेनी हो तो उस व्यक्ति से लो जिस से कभी तू तू में में ना हुई हो, कभी तकरार या झड़प ना हो । ऐसे लोग अपना बदला लेने लिये आप को गलत कार्य के लिये उकसाएंगे ।

-बुरे वक्त में राय लेनी हो तो किसी अनजान समझदार बुजुर्ग व्यक्ति या माता से लें और उसे अपने बारे कुछ ना बताये कि आप कौन है क्या है । नहीं तो बाते पहुंच जाती है ।

-सबसे उत्तम राय लेना चाहते है तो जिस तरह की समस्या हो, उस से सम्बन्धी पुस्तकें पढ़ो या उस समस्या पर काम कर रही संस्था या व्यक्ति से पूछो

-जब कभी बुरे दिन आये, कुछ समझ ना आये क्या करें । उस समय लोग आप को तरह तरह की राय देंगे । तब आप ने विरोधियों के प्रति कुछ भी नहीं कहना ।

-सार में याद रखो आप को कोई भी तन की, मन की, धन की, सम्बन्ध की, संस्कारो की, योग की, अकेलेपन की या परिवार या व्यवसाय या कोई भी समस्या आये इन समस्याओं का एक ही इलाज है आप तुरंत बुक्स पढ़ो । आप को बहुत अच्छी राय मिलेगी और आप देखते ही देखते अमीर बन जायेंगे ।

-मनोबल द्वारा अमीर बने -23

-पाने के लिये देना होगा और सहानुभूति रखनी होगी ।

-दौलतमंद हम सीधे काम कर के भी बन सकते है । परंतु उसे महान नहीं कहेंगे । जो व्यक्ति सिर्फ महान बनने लिये काम करता है वह महानता कभी हासिल नहीं कर सकता ।

-जीवन का महान नियम है -देना -जिसे सेवा कहते है ।

-महानता के लिये हर स्त्री पुरुष को दूसरो की सेवा करने की जरूरत होती है ।

-जिस व्यक्ति का दिल और दिमाग सेवा करने पर केन्द्रित है, वह किसी ना किसी दिन मौन मत द्वारा महानता के पद पर पहुंच जाता है ।

-सीधे खुशी की खोज करने से खुशी नहीं मिलती ।

-खुशी प्राप्त करने का नियम है - सहानुभुति और सेवा ।

-जो व्यक्ति दूसरो के शारीरिक, भौतिक वस्तुओं और आध्यात्मिक कल्याण में रुचि रखते है वही महान और अमीर बनते है ।

-छोटे, हीन, लोभी तथा स्वार्थी लोग हमेशा गलत राह पर होते है ।

-सहानुभुति रखने वाले, हमेशा मदद का हाथ बढ़ाने वाले लोग ही सही राह पर होते है ।

-जब हम मन में सहानुभूति के विचार रखते हैं तो इन विचारों से चुम्बकीय बल पैदा होता है जो दूसरों के दिमाग को बदल देता है और वह लोग हमें सहयोग करने लगते हैं जिस से हमें सकून तो मिलता ही है साथ ही हम अमीरी की राह पर चल पड़ते हैं ।

-सहानुभूति की कमी के कारण लोग गरीब बने रहते हैं । जितना सहानुभूति मन में होगी उतनी ही ज्यादा अच्छी चीजें हमें मिलेंगी ।

-सहानुभूति की भावना दिमाग को सर्वोच्च सत्ता के सामंजस्य में लाती है ।

-सहानुभूति का नियम इस सिद्धांत पर बना हुआ है कि प्रत्येक क्रिया की प्रतिक्रिया समान होती है और विपरीत होती है ।

-सहानुभूति की भावना भगवान की याद से शक्तिशाली रहती है । जब व्यक्तियों से बातचीत करते हैं या मिलते हैं तब भगवान को याद करते रहो तो सहानुभूति के विचार उनके प्रति करते रहो, नहीं तो उनके व्यर्थ संकल्पों के संग का रंग लेंग जाता है और हमारे भी सहानुभूति के विचार कमजोर होने लगते हैं । जिसका सीधा असर आप के कार्यों पर पड़ेगा । हम अमीर या गरीब बनते जायेंगे ।

-अगर आप हर रोज 10 पेज न्यू साकारात्मक पुस्तक के पढ़ते हैं तो आप में सहानुभूति की भावना बनी रहेगी जितना कम पढ़ेंगे उतना ही कम यह भावना होती जायेंगी ।

आन्तरिक बल -427

-मनोबल द्वारा अमीर बने -22

-बेहतर

-आप को जितना भुगतान मिलता है, आप उस भुगतान को बढ़ा सकते हैं यदि आप एक नियम का पालना करते हैं ।

-भुगतान से अधिक और बेहतर सेवा देना ।

- बेहतर सेवा, अतिरिक्त सेवा अर्थात आप जो कुछ कर रहे हैं, उसे दिल से करें, प्यार से करें और थोड़ा सा ज्यादा समय दे अर्थात सामने वाला आप से जितनी सेवा चाहता है आप उस से ज्यादा और बेहतर सेवा दे ।

- आप इस नियम को जीवन का हिस्सा बना ले ।

- कुछ लोग यह तर्क दे सकते हैं कि भुगतान से अधिक बेहतर सेवा देने से कोई लाभ नहीं होता । उनके मालिक या बोस बहुत स्वार्थी हैं और ऐसी सेवा को समझते ही नहीं ।

- आप कह सकते हैं , बेइमान लोग ज्यादा अमीर बनते हैं । यहां यह याद रखें कि वह धनवान जरूर बन सकते हैं, परंतु मन में परेशान रहते हैं और वह लगातार पतन की ओर बढ़ रहे हैं । भगवान के घर देर है, अंधेर नहीं ।

- बेहतर सेवा करने वाले लोग दूसरे नियोक्ताओं, श्रेष्ठ संस्थाओं तथा श्रेष्ठ व्यक्तियों का ध्यान अपनी ओर खींच लेते हैं और वह उन्हें अपने पास बुला लेते हैं और उन्हें रिवॉर्ड के रूप में जबरदस्त पैसे देते हैं ।

- इस एक नियम पर निष्ठापूर्वक चलने से लोगों को ऐसे पुरस्कार मिले हैं जिन्हें सफलता का पर्याय माना जाता है ।

- आप को अपने पास मैजूद चीजों का इस तरह इस्तेमाल करना होगा कि आप अपने आस पास के लोगों से ज्यादा सेवा दे सकें । कुछ ज्यादा शुद्ध संकल्प, कुछ ज्यादा प्यार, कुछ ज्यादा अपनापन, कुछ ज्यादा सम्मान ।

- दूसरे शब्दों में यदि आप अमीर बनना चाहते हैं तो आप को सेवा करनी होगी । जो व्यक्ति दूसरों से अधिक सेवा करता है वह सब से अधिक धनवान होगा ।

- आप अधिक धन कमाना चाहते हैं तो सोचें मेरे इस काम से दूसरे को अधिक धन कैसे मिलेगा ।

-हम जो देते हैं वही मिलता है लेकिन हमें पहले देना पड़ता है ।

-हो सकता है आप दिहांडी मजदूर हो, इसके बावजूद आप दे सकते हैं । थोड़ी ज्यादा ऊर्जा, श्रम और विचार दें ।

-अपने कामकाज में थोड़ी अतिरिक्त योग्यता लाने की कोशिश करें ।

-आप को जो काम दिया जाता है आप दिमाग के इस्तेमाल से उसे करने का कोई बेहतर तरीका खोजे । अच्छी सफाई, अच्छा भोजन बनाना, अच्छा प्रबंधन, मीठे बोल, मीठी मुस्कान ।

-ऐसा एक भी काम नहीं है जो विचार करने से बेहतर ना बनता हो । ऐसी कोई विधि नहीं है जो विचार करने से बेहतर ना बनती हो ।

-अपने काम के बारे लगातार सोचते रहें । जब तक काम करें, हर घड़ी सोचे, क्या कोई ऐसा तरीका है जिस से यह काम ज्यादा आसानी से, ज्यादा जल्दी और बेहतर तरीके से किया जा सके ।

- सदा याद रखो - बेहतर योग, बेहतर ज्ञान , बेहतर सेवा, बेहतर लौकिक कार्य, बेहतर संकल्प, बेहतर सेहत, बेहतर ड्राइविंग, बेहतर विद्यार्थीपन, बेहतर चरित्र ।

-आप जो हो, जहां हो , जैसे हो बस एक शब्द दिमाग में रिपीट करो 'बेहतर' कैसे बनाऊ । आप की यह सोच आप को अमीरी की राह पर ले जायेगी ।

-मनोबल द्वारा अमीर बने -25

-टालमटोल

-जब कोई काम आता है तो हम कहते हैं थोड़ी देर बाद कर लेगें -फिर कहते हैं कल सुबह कर लूँगा, फिर कहते हैं दोपहर को कर लूँगा । इस तरह दिन गुजरते जाते हैं और काम वहीं का वहीं रह जाता है ।

-ये काम करना बचा है, ये लाइन हमारे कान में गूँजती रहती है और हमारा मन किसी काम में लगने नहीं देती ।

-दिन गुजरते जाते हैं और काम वहीं का वहीं रह जाता है । आज का काम जुड़ कर कार्य और बड़ा हो जाता है । कार्यों की संख्या और बढ़ जाती है । फिर जैसे तैसे कर देते हैं, परंतु गुणवत्ता नहीं रहती ।

-टाल मटोल करने वालों का प्रिय वाक्य होता है, करने वाला हूँ, किसी दिन करूँगा और इसका जाप करते हुये वे अपने वर्तमान अवसरों के प्रति अंधे, बहरे तथा गूँगे हो जाते हैं ।

-टाल मटोल का नियम हैं, इंतजार करो, अभी नहीं, किसी और वक्त । टालमटोल बीज है और इसे करने वाला हूँ, वह पेड़ है, जिस से यह कल का जनून उत्पन्न होता है ।

-इस संसार में ऐसा कुछ नहीं है जो एकाएक ही आदर्श बन कर प्रकट होता हो ।

-हम चाहे जो भी चाहते हो, हम चाहे जो भी करना, पाना या बनना चाहते हो, उसे साकार करने और उसका फल पाने से पहले हमें उसे शुरू करना होता है ।

-हम अगर आशा, सपने और इच्छायें छिपा कर रखते हैं तथा उन्हें आजमाने के साहस के बिना दिन, महीने वा साल गंवा देते हैं, वे एक दिन नाकामयाब हो जाते हैं ।

-हजारों अदृश्य शक्तियां उन लोगों की मदद करने का इंतजार कर रही हैं जो अपने लक्ष्य को पाने की दिशा में साहस से छलांग लगा देते हैं ।

-इसे करने वाला हूं, किसी को भी कहीं नहीं लें जाता ।

-सफलता का नियम यह है - खुद को टटोलें, यह जानें कि हम क्या करना चाहते हैं, उस करने की योग्यता को आदर्श बनाने के लिये खुद को पर्याप्त वैध समय दें और फिर उस काम को सचमुच कर दो ।

-अभ्यास से हम आदर्श बनते हैं और मोती निकल आते हैं ।

-आलस्य, इच्छा शक्ति की कमी, काम में रुचि ना होना, एकाग्रता का अभाव, खुद को अक्षम मानना, नाकारात्मक सोच, परिणाम के प्रति अनिश्चितता के कारण टाल मटोल की आदत पड़ जाती है ।

--इस का मूल कारण मानसिक वा शारीरिक कमजोरी है । सात्विक भोजन फल, हरी सब्जियां और गाय के दूध पर विशेष ध्यान दो । तथा मनोबल बढ़ाने वाली बुक्स पढ़नी चाहिये । भगवान की याद से मनोबल बढ़ता है ।

-जब भी टाल मटोल के विचार आये तुरंत मन में रिपीट करो मैं हर काम समय पर करता हूं....हर काम समय पर करता हूं. ये अभ्यास आप को तब तक करते रहना है जब तक टाल मटोल के विचार आने बंद ना हो जाये । आप को 6 मास या इस से ज्यादा समय भी लग सकता है ।

-अगर आप अमीर बनना चाहते हैं तो टाल मटोल की आदत पर विजय प्राप्त करनी ही होगी ।

-मनोबल द्वारा अमीर बने -29

-पैसे में कलाट ना डाले

-पैसे के बारे में चिंतन जब चिंता में बदल जाता है तब चिंता का विचार हमारे पास आने वाली दौलत के बीच में रुकावट अर्थात ब्लाक अर्थात कलाट अर्थात गांठ बन जाता है ।

-हमारे शरीर में खून बहता रहता है । यदि किसी कारण से खून में कलाट आ जाये तो उस से खून में रुकावट आ जाती है जिस से हार्ट अटेक तक हों जाता है ।

-ऐसे ही पैसे के साथ भी ऐसा ही होता है । पैसे के बहाव में एक छोटा सा कंकड़ (ब्लाक) भी आने वाले पैसे के प्रवाह को रोकता है ।

-रक्त और पैसा दोनो एक समान है दोनो को बहते ही रहना चाहिए ।

-एक कंजूस आदमी पैसे के बहाव में ऐसे ही रुकावट हैं, जो पैसे के बहाव को रोक कर रखता है ।

-हरेक व्यक्ति के जीवन में धन का प्रवाह सदा रहता है मगर लोग उसे मिस ट्यून कर रहे हैं ।

-आप ने किसी दुकान से 40 रुपये का समान खरीदा और उसे 50 रुपये का नोट दिया और उस ने उसे 100 रुपये का नोट समझ कर 60 रुपये आप को वापिस कर दिये । आप ने यह 60 रुपये का ब्लाक डाल दिया ।

-बस में सफर किया परंतु बिना किराया दिये आप उतर गये और 10 रुपये बचा लिये । यह 10-रुपये का ब्लाक डाल दिया । यह 10 'रुपये आप के 100 रुपये, 1000 रुपये या 10000 रुपये रोकेगा ।

-आप फिल्म देखने गये और आपको एक टिकट के बजाये दो टिकट मिल गये ।एक टिकट बेच कर खूब एंजाय किया ।

-एक विद्यार्थी ने किसी को लोन दिया । लोन लेने वाला मुकर गया । उसे बहुत समझाया परंतु उसने लोन नहीं लौटाया । वास्तव में विद्यार्थी ने एक बार एक कोर्स किया था परंतु उस की फीस नहीं दी । उसे फीस वापिस करने को कहा । उसने फीस की राशि लौटा दी और कुछ दिनों बाद उसका लोन उसे वापिस मिल गया ।

-हमें जिंदगी में इस तरह के ब्लाक्स नहीं डालने हैं । यदि गलती से भी ऐसा हुआ हों तो आज से ही ब्लाक्स डालना बंद करो ।

-जिस तरह एक छोटा सा पत्थर भी पाइपलाइन में आ जाये तो पानी की धारा कम हों जाती है ।

-उसी तरह पैसे के बहाव में एक छोटा सा ब्लाक भी आने वाले पैसे के बहाव को रोक सकता है ।

-आप के जीवन में धन से सम्बन्धी कोई दिक्कत है तो ज़रूर कहीं ना कहीं आप के मन में कोई ब्लॉकेज है । उस कचरे को साफ करो आप के जीवन में खुशहाली आ जायेगी ।

आन्तरिक बल.432

-मनोबल द्वारा अमीर बने -28

-धन सम्बन्धी गलत धारणायें

-ज़हर जिस बरतन में रखा जाता है, उसी बरतन को खा जाता है ।

-हमरी अंदरूनी दुनियां में कुछ विचार, कुछ विश्वास, कुछ बातें; कुछ अनुभव, कुछ आदतें जा चुकी हैं । ये विचार मन में पड़े रहते हैं और ज़हर की तरह अन्दर ही अन्दर मनुष्य को खाते रहते हैं । ज्यादातर लोगों में नीचे दी गई धारणायें मन में गहराई तक जमी हुई हैं ।

-पैसा सारी बुराई की जड़ है ।

-पैसा बुरी चीज़ है ।

-मैं अमीर बनने के लायक नहीं हूँ।

-पैसा सिर्फ लालची और बेइमान लोगो के पास है ।

-पैसा भ्रष्ट बनाता है ।

-आप को पैसे के बारे डींगें नहीं हांकनी चाहिये । कभी मत बताओ कि कितना कमाते हो । आप के पास कितनी सम्पत्ति है ।

-पैसा होने पर आध्यात्मिक शुद्धता नहीं रहती ।

-अमीर बनने पर आप के दोस्त छूट जाते है ।

-अमीर बनने के लिये मेहनत करनी पड़ती है ।

-खुशी और पैसा एक साथ नहीं रह सकते ।

-आप के पास जितना ज्यादा पैसा होगा, आप उतने ही ज्यादा की इच्छा करेगें ।

-गरीब लोग ज्यादा अच्छे हैं ।

-भगवान मुझे अमीर नहीं बनाना चाहता नहीं तो अब तक मैं अमीर बन गया होता ।

-इन में से कितनी बातों पर आप यकीन करते हैं । किस विचार से आप के शरीर के तार झनझनाने लगते हैं ।

-ये सभी तथा इसी तरह की अन्य धारणायें मन में गूँजती रहती हैं और प्रकम्पित हों कर आकाश में फैल जाती हैं और ब्रह्मांड हमारे विचारों अनुसार व्यक्ति और परिस्थितियाँ ला खड़ा करता है जो हमें धन से वंचित रखते हैं ।

-इस लिये जो धारणायें सच नहीं बकवास हैं उन्हें छोड़ दो ।

-पैसे की इच्छा अच्छी बात है ।

-मैं दौलतमंद बनने जा रहा हूँ ।

-मैंने मेहनत करने की कसर कस ली है ।

आन्तरिक बल -431

-मनोबल द्वारा अमीर बने -26

-अमीरी एक विज्ञान है

-गणित एवं भौतिकी के सिद्धांतों की भाँति अमीरी के भी कुछ नियम हैं । कोई भी व्यक्ति इन्हें सीख सकता है और इनका पालन कर के अमीर बन सकता है ।

-क्रिया प्रतिक्रिया के नियमों की भाँति यह एक अचूक नियम है । कोई भी स्त्री अथवा पुरुष इसे सीख कर इसका पालन करेगा तो निश्चित तौर पर वह धनवान बनेगा ।

-एक ही जगह के दो लोग समान व्यापार में होते हुए भी गरीब और अमीर हैं । यह एक कार्य प्रणाली का परिणाम है ।

-भगवान ने अमीर बनने के लिये ज़रूरी गुण हम सभी में पहले से ही भर रखे हैं । तभी तो प्रतिभावान, बुध्ीवान, अनपढ़, स्वस्थ, अस्वस्थ, बलवान तथा कमजोर सभी प्रकार के लोग अमीर बन चुके हैं ।

-अमीर बनने में लोक व्यवहार महत्वपूर्ण है । हमें जितनी भी समस्याएँ आती हैं वह लोगों के व्यवहार के कारण उत्पन्न होती हैं । ज़रा से बोल के कारण, ज़रा सा बोलने के टोन, ज़रा सी माथे की सलवट के कारण लोग हमारे से रुष्ट हो जाते हैं, वह हमें सहयोग नहीं देते, जिस से हमारे आर्थिक हित प्रभावित होते हैं ।

-हर व्यक्ति में धन कमाने की कोई ना कोई कला होती है, रहस्य होता है । अगर वह नराज हो गया तो धन कमाने का अपना रहस्य नहीं बतायेगा । इसलिये हमें हर रोज़ व्यवहार कला की कोई ना कोई पुस्तक ज़रूर पढ़नी चाहिये ।

-अवसर किसी काम में नहीं बल्कि आप में छिपा होता है ।

-प्रकृति किसी को भी अवसर का लाभ उठाने से नहीं रोकती बशर्ते कि वे अमीरी के विज्ञान की दिशा में सोचना आरम्भ कर दें ।

-अमीरी के नियमों की तुलना एक पेड़ से कर सकते हैं ।

-एक पेड़ पर फल लगते हैं । परंतु फल तो बीज और जड़ों से पैदा हुये हैं ।

-जो जमीन के अन्दर हैं, वह जमीन के उपर की चीजों को पैदा करता है । जो दिखता नहीं हैं वह दिखने वाली चीजों की रचना करता है । इसलिये अगर आप फलों को बदलना चाहते हैं तो पहले आप को जड़ों को बदलना होगा ।

-इसी तरह दुनियां में दिखाई देने वाली चीजों को बदलना चाहते हैं तो पहले आप को अदृश्य चीजों को बदलना होगा ।

-जो नहीं देख सकते वह किसी भी दिखने वाली चीजों से ज्यादा शक्तिशाली होता है ।

-जिस हद तक आप इस नियम को लागू करते हैं अर्थात अपनी जड़ों यानी आन्तरिक संसार को श्रेष्ठ बनाते हैं तो आप का बाहरी संसार भी बहुत अच्छा होगा ॥

-धन दौलत तो फल है परंतु यह पैदा आन्तरिक संसार की श्रेष्ठता के अनुपात में होता है । आप का चरित्र, सोच और विश्वास आप की आर्थिक स्थिति निर्धारित करता है ।

-डर, चिंता, असुविधा, परेशानी या आप का मूड ना होने पर भी काम कर सकते हैं । यदि हां तो आप को धनवान बनने से कोई रोक नहीं सकता ।

आन्तरिक बल 434

मनोबल द्वारा अमीर बने -30

--पायदान

-अमीर बनना आप का जन्म सिद्ध अधिकार है ।

-पायदान दरवाजे पर पड़ा रहता है ।

-लोग कितनी बेरहमी से अपने पैरों की धूल झाड़ते रहते हैं ।

-महीनों वर्षों तक इसी तरह इस्तेमाल लाते रहते हैं ।

-जब वह फट जाता है, उसके चिथड़े होने लगते हैं तो उसे फेंक दिया जाता है तथा उसके स्थान पर नया पायदान ला कर रख दिया जाता है । वह कोई विरोध नहीं करता ।

-क्या लोग आप को कुचलते हुये अपने रास्ते पर आगे बढ़ जाते हैं और आप अपने स्थान पर चुपचाप पड़े रह जाते हैं ।

-लोग आप को अपनी सफलता के लिये सीढ़ी के रूप में प्रयोग करते हैं ।

-लोग आप से काम निकाल कर आपको पारिश्रमिक देना भूल तो नहीं जाते और आप चुपचाप सब कुछ स्वीकार कर लेते हैं ।

-बचपन से ही आप के साथ इस तरह घटित होता रहा है, जब लोग आप से कोई काम करवाते थे और बदले में सिर्फ 'अच्छा लड़का' और 'अच्छी लड़की' कह कर आप की पीठ थपथपा देते थे ।

-आप ने अच्छा होने की छवि तो बना ली परंतु दूसरो के हाथ का एक औजार बन गये, जिसे कभी इधर तो कभी उधर घुमा कर काम लिया जाता है । इस तरह आप का जीवन भी दरवाजे पर पड़े पायदान जैसी ही हों जाता है ।

-यदि आप के जीवन का नियंत्रण दूसरो के हाथ में है तो आप किसी भी स्थिति में आगे नहीं बढ़ सकते ।

-पायदान तो बोल नहीं सकता, इस लिये विरोध नहीं कर सकता । आप अगर विरोध नहीं तो फुफकार मार कर लोगों को डरा तो सकते हैं । चीख कर अपना अधिकार तो मांग सकते हैं ।

-मोमबती

-मोमबती जल कर आसपास प्रकाश फैलाती रहती है और ऐसा करते करते खुद नष्ट हों जाती है । दूसरा मोमबती के नीचे अँधेरा रहता है ।

-कहीं मोमबती की तरह अपनी जरूरतों को भूल कर दूसरो की मदद में तो नहीं लगे रहते हैं ।

-दूसरो की मदद करते रहते हैं और स्वयं को अभावों में धकेल रहे तो यह आप अपने साथ अत्याचार कर रहे हैं ।

-नहीं

-हम अक्सर लोगों को खुश करने के लिये अपना छोटा मोटा या कभी कभी बड़ा त्याग करने के लिये तैयार हों जाते हैं ।

-हम सोचते रहते हैं अगर मैं 'नहीं' कह दूंगा तो यह नराज हों जायेगा या हमारी वर्षों की दोस्ती टूट जायेगी । तथा हम ना चाहते हुये भी धन उधार दे बैठते हैं ।

-इसलिये 'नहीं' कहना भी सीखो नहीं तो सारी जिंदगी गुलामों की तरह बितानी पड़ेगी ।

आन्तरिक बल -435

-मनोबल द्वारा अमीर बने - 31

-पास या दूर

-हमारा एक एक कार्य या तो हमें पैसे के निकट ले जा रहा है या पैसे से दूर ।

-आलस्य पैसे और समय दोनो का चोर हैं ।

-आप पैसे से सम्बन्धित मामलो में टाल मटोल करते रहते हैं जिन्हे आप की प्राथमिकता की जरूरत होती है । जैसे कि समय पर पैसा बैंक में जमा ना करना फालतू घर पड़ा रहता है । धन को फिक्स्ड डेपॉज़िट में ना डालना और ब्याज का घाटा खाते रहना । किसी ने उधार लिया और उस से वापिस न मांगना

-अव्यवस्थित रूप से कार्य करना,पैसे का ठीक ठीक हिसाब किताब ना रखना,पैसे की प्रवाह ना करना, समस्याओं से बचने के लिये बहाने ढूँढना । ये सब आप को पैसे से दूर ले जायेंगे ।

-दूध फट जानें पर उस के लिये चीखने चिलाने का कोई लाभ नहीं, उसी तरह पैसे के मामले में पूर्व में की गई गलतियों पर भी शोर मचाने का कोई लाभ नहीं होगा ।

-आप पैसे से जितना प्यार करेंगे, पैसा भी आप से उतना ही प्यार करेगा ।

-आज से और अभी से पैसे से सम्बन्धित कोई भी काम करने से पहले स्वयं से पूछने की आदत डाले - यह काम कहीं पैसे से दूर तो नहीं ले जा रहा ।

-भूलना

-जब कोई शूरवीर समय पर शस्त्र प्रयोग करना भूल जाये तो यह अभिशाप माना जाता है।

-जब आप पैसे की दुनियां में बनाये गये नियमों को तोड़ते हैं तो आप को उसका दंड मिलता है । यह दंड कोई व्यक्ति या संस्था नहीं देती लेकिन परिस्थितयां स्वयं देती है ।

-कई देशों में दाई ओर चलना होता है । अगर आप भूल कर बाय तरफ़ चलते हैं तो कितनी मुसीबत आ जाती है । दंड के रूप में धन गंवाना पड़ता है ।

-आप अपने बिजली पानी के बिल समय पर जमा करवाना भूल जाते हैं तो आप को फाइन भरना पड़ता है ।

-आप को कहीं से वापिस आते हुये कुछ खरीद करना था परंतु भूल गये । घर आने के बाद याद आया । आप फिर समान खरीदने गये । इस से समय और पैसा दोनो ही व्यर्थ खर्च होता है । इस लिये जो भी कुछ खरीदना हों उसकी लिस्ट बनाते रहो ।

-जब हम किसी बात वा काम को छोटा मानते हैं तो भूल जाते हैं ।

-पैसा और पैसे से सम्बन्धित कोई भी बात छोटी नहीं होती । पैसे से सम्बन्धित गलतियों से बाहर निकलना होगा ।

-ना भूलने की बात सदैव याद रखो । इस समस्या से बचने के लिये जो जो काम करने हैं और कब कब करने हैं उन्हें लिखते रह करो ।

आन्तरिक बल -437

-मनोबल द्वारा अमीर बने -33

-बुद्धिमता -2

-कुछ लोग इतना कम पढ़ते हैं कि उन्हें मानसिक कुपोषण जनित रोग हो गया है ।

-आप को ना सिर्फ अपने मस्तिष्क को खुराक देनी चाहिये, बल्कि यह भी सुनिश्चित करना चाहिये कि यह मानसिक खुराक अच्छी तरह संतुलित हो ।

-अपने पढ़ने के समय को विचारों के खजाने का दोहन करने का समय माने । तथा इस खजाने के दोहन के लिये कोई 3 मिनिट भी ना निकाले तो उसे क्या कहेंगे ।

-आम शिक्षा से तुम्हें आम परिणाम मिलेंगे । आम शिक्षा वाले लोगों की आमदनी देखने के बाद फैसला करो कि क्या तुम इतना ही चाहते हो । अगर तुम औसत से ज्यादा चाहते हो तो लगातार सीखते रहो । तुम्हें आत्म शिक्षित बनना ही होगा । वह पुस्तकें और टेप खरीदो, जिन की जरूरत आप को आत्म शिक्षा के लिये है । बेहतर भविष्य के लिये खुद को कंजूस मक्खीचूस ना बनाये ।

-दोहराना योग्यता की जननी है । अच्छी चीजों को दोहराते रहा करो ।

-याद रखो आप वही हैं जो आप पढ़ते हैं ।

-पुस्तकें पढ़ना फुरसत की विलासता नहीं है । यह तो उन लोगों के लिये ज़रूरी है जो जीवन में उन्नति करना चाहते हैं ।

-हाँई स्कूल या कालेज पास कर लेना, न पढ़ने का कोई लाइसेन्स नहीं मिल जाता ।

-पढ़ना शुरू करें और खासतौर पर ऐसी पुस्तकें पढ़ें जो आप के भीतर छिपी सम्भावनाओं को प्रकट करने में मदद करें ।

-आप को सारी पुस्तकें तत्काल पढ़ने की जरूरत नहीं है । एक सप्ताह में दो पुस्तकें पढ़ें । अगर यह भी आप को ज्यादा लगता हो तो दो पतली पुस्तकों से शुरू करो । दस साल तक यह काम करते रहो तो आप 1000 से ज्यादा पुस्तकें पढ़ लेंगे ।

-हज़ार पुस्तकें पढ़ लेने पर आप के जीवन के विभिन्न पहलुओं पर प्रभाव पड़ेगा ।

-अगर आप पिछले दस सालों से हफ्ते में दस पुस्तकें नहीं पढ़ रहे हैं, तो आप ऐसा करने वालों से 1000 पुस्तकें पीछे हैं ।

क्या आप उस अविश्वसनीय घाटे को समझ रहे हैं, जो आप को दस साल में होगा, अगर आप दो हज़ार पुस्तकें पीछे रह कर बाज़ार में कदम रखेंगे । कुछ मामलों में तो वे आप को कच्चा चबा जायेंगे और बाहर उगल देंगे ।

-ज्ञान की कमी के कारण आप कुछ जबरदस्त मौके भी चूक जायेंगे ।

-चूकी हुई योग्यताएँ, चूका हुआ ज्ञान, चूकी हुई अन्तर्दृष्टि , चूके हुये जीवन मूल्य, चूकी हुई जीवनशैली
- ये सभी पुस्तकें ना पढ़ने का परिणाम हैं ।

-याद रखो जिस पुस्तक को पढ़ा नहीं गया वह आप की मदद नहीं कर सकती।

-ऐसा कभी नहीं होता कि आप ने जरूरत से ज्यादा पुस्तकें पढ़ ली हैं । परंतु ऐसा हमेशा होता है आपने जरूरत दे कम पुस्तकें पढ़ी हैं

-मनोबल द्वारा अमीर बने -32

-बुधिमता

-अगर दौलतमंद बनना चाहते हैं तो दौलत के बारे अध्ययन करो ।

-बुधीवान मनुष्य हर परिस्थिति में पैसा कमा सकता है ।

-बीरबल अपनी बुधिमता के कारण ऊंच पद पर था । उसके विरोधियों ने अकबर को बताया कि बीरबल अपने कार्य में हेराफेरी करता है । बीरबल कि ड्यूटी समुद्री लहरें गिनने पर लगवा दी और सोचा कि वह तन्हाई में मर जायेगा । परंतु बीरबल ने बुधि यूज की और सब आने जानें वाली किशितियों और समुद्री जहाजों को रोक दिया क्योंकि उसे लहरें जो गिननी थी ।

-शर्त रख दी कि वहीं जहाज जायेगा जो शुल्क देगा । सभी शुल्क देने लगे । इस तरह उसने वहां भी पैसे कमाने शुरू कर दिये ।

-अगर व्यक्ति बुधीवान है तो कभी भूखा नहीं रह सकता ।

-इसलिये प्रत्येक व्यक्ति को अपनी बुधि को तेज करते रहना चाहिये ।

-महान विचार सभी को आते हैं परंतु वह तेजी से हमारे पास से गुजर जाते हैं । ये विचार अचानक आते हैं तुरंत भूल जाते हैं इसलिये उन्हें तुरंत लिख लेना चाहिये ।

-ज्ञान का एक तरीका आप की व्यक्तिगत लाइब्रेरी है ।

-वह पुस्तकें जिन पर आप ने निशान छोड़े हैं। जिनका आप ने अध्ययन किया है और जिन्हें आप ने अंडरलाइन किया है। जिनके मार्जिन पर आप ने नोट्स छोड़े हैं। यह सचमुच पकड़ने लायक खजाना है। ऐसे विचार किसी एक डायरी में उतार लो और उसे महीने में एक बार रिवाइज़ करते रहो।

-पुस्तकें और टेपस

-सफल व्यक्ति पढ़ते हैं पढ़ते हैं और केवल पढ़ते हैं।

-सभी लीडरस पढाकू होते हैं।

-व्यस्त लोग अपनी कार में यात्रा करते समय टेप सुनते हैं जो कि ज्ञान के बहुत अच्छे स्रोत होते हैं।

-आम आदमी व्यस्त है। वह देर से घर लौटता है, उसके पास झटपट खाने और टी वी देखने का थोड़ा समय होता है।

-आप को अच्छे कर्मचारी के साथ साथ अच्छा पाठक बनना है।

-आप को पढ़ने का समय नहीं तो कम से कम घर आते समय कोई अच्छा टेप सुन सकते हैं।

-आधी रात तक आप को पढ़ने या सुनने की जरूरत नहीं और अगर आप कंगाल हैं तो ये विचार बुरा नहीं है।

-सीखने में आप दिन भर में सिर्फ तीन मिनट जरूर लगाये।

-अगर बेहतर प्रदर्शन चाहते हैं तो तीन मिनट की अवधि को एक घंटे में बदल दे।

-एक वक्त का खाना लेट हों जाये तो हों जाये परंतु तीन मिनट जरूर पढ़ना है।

-भोजन के बिना रह सकते हैं परंतु विचार, मिसाल और प्रेरणा को छोड़ना बर्दाश्त नहीं कर सकते ।

-भोजन के बाद मस्तिष्क को शब्दों का पोषण दिया जाना चाहिये । दुर्भाग्य से अधिकांश लोग मानसिक कुपोषण का छिकार हैं ।

आन्तरिक बल - 438

-मनोबल द्वारा अमीर बने -34

--बुधिमता -3

-अपने आप को कभी भी छोटा अयोग्य, बुधिहीन ना समझो । यही सोच कर चलो कि मैं हर काम कर सकता हूँ ।

-यह दुनियां कमजोर, तुच्छ, प्रभावहीन लोगों में कोई रुचि नहीं रखती ।

-आदमी के मन के अन्दर एक संसार हैं और अधिक समय तक आदमी उसी के अन्दर रहता है । यह संसार उसके विचारों का है ।

-आप का जीवन वैसा ही बनेगा जैसे आप के विचार हैं । इसलिये सदैव अपने विचारों को ऊँचा रखिये ।

-आगे बढ़ने के लिये पहले अपने आप में शक्ति पैदा कीजिये, महान बनने की शक्ति ।

-किसी भी आदमी को उसके घटियापन का सुझाव देना, किसी भी भयंकर शाप से कम नहीं क्योंकि ऐसे सुझाव उसे सदा नीचे ही दबाये रखते हैं । अगर हम मन में किसी को घटिया समझते हैं तो यह भी अभिशाप है । जो हमारे मनोबल को भी कमजोर करता है ।

-उन क्षणों से घृणा करें जो आप को छोटा बनाते हैं, जिनके अहसास से ही यह महसूस होता है कि आप मंद बुद्धि हैं ।

-बच्चों में हर समय दोष और गलतियां निकालते रहना, आलोचना करते रहना, निरंतर उन्हें मूर्ख, पागल, बुद्धिहीन कहते रहना, यह उनके हित में नहीं हैं । ऐसे बच्चे जीवन में आर्थिक बुलंदियों को नहीं छू पाते । यही नियम उन लोगों पर भी लागू होता है जो हमारे साथ रहते हैं, हमारे लिये काम करते हैं ।

-इस से उनके मन में अपने आप अहसास पैदा होने लगता है कि शायद वास्तव में ही वह कुछ करने योग्य नहीं है ।

-एक प्रकार की हीन भावना, छोटापन उनके मन में पैदा हो जाता है । जो उनके भविष्य को अँधेरे में धकेल देता है ।

-यह हीनता ऐसी दिमाग में बैठ जाती है जिसे हम सारी जिंदगी दूर नहीं कर सकते । यह दुर्बलता आपको दबाये रखेगी ।

-यदि मेरे माँ-बाप मुझे शिक्षा दिला देते तो मैं कितना बड़ा बन सकता था । ऐसी भावना अपने मन में उठने मत दो । जो नहीं कर सकें उसे अब पूरा कर लो । अपने बच्चों वा सहयोगियों को जो आप से प्यार करते हैं उन्हीं बन दो ।

-जो विचार आप को शक्ति नहीं देते, आप की उन्नति में बाधा डालते हैं उन्हें मन से निकाल दो । अतीत में जो चोट लगी है उसे बहादुरी से बदलो । मन की शांति भंग मत होने दो ।

-पुरानी बातें तब भूलती हैं, जब आप भगवान को याद करते रहें और साथ में आप कोई काम में लगे रहे या बुक्स पढ़ते रहें या काम के साथ साथ रात्रि शिक्षण संस्था जोड़न कर लें

-याद रखो आप का हर नकारात्मक संकल्प आप को आर्थिक दृष्टि से कमजोर कर रहा है और हर सकारात्मक संकल्प आप को आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न बना रहा है ।

-मनोबल द्वारा अमीर बने -36

-समय प्रबंधन

-वाणी

-हमें उच्च कोटी का योगी, लेखक, डॉक्टर, इंजिनियर या आई ए एस बनना है या किसी अन्य क्षेत्र में मास्टरी ग्रहण करना चाहते हैं तो इस के लिये कम से कम 6 घंटे हर रोज़ उस क्षेत्र में लगाने होते हैं ।

-ऐसे महान कार्यों की शुरुआत करने वाले लोगों से यह संसार भरा पड़ा है । महान शुरुआत या निर्णय या अपने जीवन के श्रेष्ठ कार्य जैसे अपनी सेहत, नौकरी, काम धंधे या पारिवारिक जीवन हो, अगर 90 दिन तक लगातार कर ले तो यह हमारी आदत बन जाती है और हम उस रास्ते पर बढ़ते रहेंगे । परंतु यह कर नहीं पाते क्यों कि समय नहीं मिलता ।

-हरेक व्यक्ति के पास जीने के लिये हर दिन चौबीस घंटे ही होते हैं । हम इसी दौरान खुशी, पैसा, संतुष्टि, सम्मान और अपनी अमर आत्मा का क्रमिक विकास चाहते हैं ।

-अक्सर लोग कहते हैं क्या करें समय कम था , समय कितना भी हो कम ही पड़ेगा । क्योंकि यह अनचाहे संघर्षों में बहुत नष्ट होता है । कुछ ऐसी क्रियाएँ हम मन वचन वा कर्म से कर बैठते हैं जो उन पलों के बीत जाने के बाद भी हम उलझे रहते हैं और समय नष्ट होता रहता है ।

-समय बचाना है तो सब से पहले वाणी पर कंट्रोल रखो । वाणी में नियंत्रण होगा तो बहुत सारी विपत्तियों से बचोगे और विपत्तियों पर खर्च होने वाला समय बचेगा । अक्सर छोटी छोटी और गैर ज़रूरी बातचीत में पड़ने से समय नष्ट होता है और हम अपना ध्यान एकाग्र नहीं रख पाते ।

-चिलाते हुये बोलना । अश्लील शब्द बोलना । कटु वचन बोलना । चिढ़ाते हुये बोलना ।ताने मारना । हंसी उडाना । चुगली करना । भौंहे चढ़ा कर बोलना । बे सिर पैर की हांकना । हर बात को काटना ।

तेज गति से बोलना । ये सब वाणी के दोष है । इन शब्दों से लोग आहत हो जाते हैं और मन ही मन तथा कर्म में विरोध करने लगते हैं या अड़ंगे डालने लगते हैं । ये ऐसे दोष हैं जिस से लड़ाई झगड़े हो जाते हैं और हम पुलिस और कोर्ट के चक्रों में फंस जाते हैं । जिस से मन की सूक्ष्म एनर्जी और अमूल्य समय मन मुटाव में खर्च होता है । धन भी नष्ट होता है । इन से बचना चाहिये ।

-अखबार

-अखबार में बासी खबरे होती हैं और टी वी सीरियल कल्पनिक होते हैं । सोच समझ कर इन पर समय खर्च करना चाहिये ।

-दोष देना

-किसी को दोषी सिद्ध करने में समय खर्च ना करें । इस से आप को कुछ नहीं मिलेगा क्योंकि वह दोषी सिद्ध हो पायेगा की नहीं परंतु आप का समय तो बर्बाद हो ही जायेगा । आप अपने काम पर ध्यान रखो । अगर वह कोई गलती कर रहा है तो जो उस काम के लिये जिम्मेदार लोग हैं वह देखेंगे । आप ऐसे लोगों के प्रति कल्याण की भावना रखते हुये आगे बढ़ते रहो ।

-दूसरो का ध्यान

-आप की वजह से किसी दूसरे का भी समय बर्बाद ना हो । आप ने लाइब्रेरी से पुस्तक ली और समय पर वापिस नहीं की । दूसरा व्यक्ति जिसे इस की सख्त जरूरत थी नहीं ले सका । इस तरह आप की वजह से उसका समय नष्ट हुआ ।

- बिना वजह दोस्तों से सेल पर फोन करने से समय बर्बाद होता है । आज सब से ज्यादा समय बरबाद फोन पर ही हो रहा है ।

-किंतु परंतु से बचो । शंकाएं करोगे तो इन का समाधान नहीं कर पायेंगे । समय व्यर्थ जायेगा ।

-टाल मटोल

-किसी काम को टालो नहीं । काम तो करना ही होगा । वही काम समय बीतने पर करने से दुगना समय लगेगा । तथा ये टाले गये काम जब जब आप पढ़ रहें होंगे, योग लगा रहे होंगे या और कोई ज़रूरी काम में व्यस्त होंगे तो मन में आते रहेंगे । ऐसे जो भी काम याद आये उन्हें तुरंत लिख लो और जब आप बजार आदि जाते हैं तो यह लिस्ट साथ रखो और ये काम निपटा दिया करो । आप का बहुत समय बचेगा ।

-तर्क वितर्क और बुराई

-दूसरो की ओर बुराई रूपी गंदगी फेंक कर और निन्दा चुगली करके अपना समय क्यों बर्बाद कर रहे हो । वही समय अपने पर इन्वेस्ट करो ।

-फालतू के तर्क वितर्क में समय बर्बाद होता है और आपसी मन मुटाव भी हो जाता है ।

छोटी छोटी बातों पर लोग बहस करते हैं और फिर लड़ने लगते हैं इसलिये हमें ऐसे संघर्षों वा बहस से बचना है ।

-अगर आप इन छोटी छोटी बातों का ध्यान रखोगे तो आर्थिक रूप से सम्पन्न होने लगेंगे ।

आन्तरिक बल -441

--मनोबल द्वारा अमीर बने -37

-समय प्रबंधन और गुरुत्वाकर्षण का नियम है ।

-अगर हम हवा में छलांग लगाये तो पृथ्वी के आकर्षण के कारण नीचे आ जायेंगे ।

-समय के मामले में भी यही होता है ।

-जैसे ही आप कोई महत्वपूर्ण कार्य शुरू करते हैं तो वैसे ही बाधाओं की गुरुत्वाकर्षण शक्ति सक्रिय हो जाती है और आप को नीचे धकेलने लगती है ।

-दूसरे लोग आ कर आप के काम में विघ्न डालते हैं । वे आप से कोई दूसरा काम करने को कहेंगे । किसी का फोन आ जायेगा । बस आप को कोई ज़रूरी काम बता देगा । पत्नी बाजार से कोई ज़रूरी सामान मंगायेगी । बच्चे होम वर्क में आप की मदद मांगेंगे । आप का आश्रम आने का समय होगा, आप चलने को तैयार होंगे, ठीक उसी समय कोई रिश्तेदार या मिलने वाला आ जायेगा ।

-यह और कुछ नहीं गुरुत्वाकर्षण का नियम है । जैसे ही आप महत्वपूर्ण कार्य शुरू करते हैं, रूकावट आने लगती है । अन्य तत्कालिक कार्य हावी होने लगते हैं और परिस्थितियाँ विकट होने लगती हैं । परीक्षा के दिन हैं और आप बीमार पड़ गये या कोई घर का सदस्य बीमार हो गया और आप को उसका ध्यान रखना पड़ा ।

-यह बाधाओं के रूप में गुरुत्वाकर्षण है, जो आप को नीचे खींच रहा है । आप को इस शक्ति के प्रति सजग रहना होगा ।

-दूसरो की तरक्की देख कर जलने की परम्परा है । दूसरो की टांग खींचने और दूसरो के पर कतरने की परम्परा है ।

-आप का उपर उठना आप के आस पास के लोगों, शायद आप के रिश्तेदारो को भी पसंद नहीं आयेगा । वे अपनी तरफ़ से पूरी बाधा डालने की कोशिश करेंगे । आप की झूठी शिकायत करेंगे ताकि आप का ध्यान भटक जाये ।

-इस से बचने का उपाय बहुत सरल है -अपना मुंह बंद रखे । किसी को भी ना बताये कि आप कोई महत्वपूर्ण कार्य कर रहे हैं । आप ने कोई नई आदत डाली है या आप कितना उंचा उठना चाहते हैं । मान लो आप बूढ़े हैं, अनपढ़ हैं, और पढ़ना चाहते हैं तो छुप कर पढ़ो नहीं तो लोग तुम्हारा मजाक उड़ायेगे , तुम्हारा मनोबल तोड़ देंगे ।

- आप डींगें हाकने या अपनी योजना बताने के प्रलोभन से बच जाये तो आप बहुत सी अड़चनों से बच जाते हैं । किसी को पता ना लगने दें वरना आप को पूरी शक्ति से नीचे खींच लेंगे । लोग ऐसे प्रपंच रचेंगे ताकि आप मानसिक रूप से डिस्ट्रब हो जाये और लक्ष्य से भटक जाये ।

-गुरुत्वाकर्षण के नियम अनुसार बाधाएँ आती हैं, उनसे निपटने की नीति बना ले ।

-तुम अपने मिनटों का ध्यान रखो फिर घंटे खुद आप की प्रवाह करेंगे ।

-जितना आप अपना समय बचायेंगे और अपने को सकारात्मक सोच और सकारात्मक कार्यों में व्यस्त रखेंगे उतने ही आर्थिक रूप से सम्पन्न होते जायेंगे ।

आन्तरिक बल - 439

-मनोबल द्वारा अमीर बने - 35

-भविष्य में निवेश करना

-खुशी और दौलत पाने के लिये हमें ज्ञान की निरंतर खोज करनी होगी ।

-ज्ञान की खोज के लिये अपने पर निवेश करने की जरूरत है ।

-आप को पैसे खर्चने होंगे । पुस्तकें और केसेट्स खरीदने होंगे तथा सेमिनार, कान्फरेन्स और योग भट्टिया आदि में शामिल होना होगा ।

-अपनी शिक्षा के लिये अलग फंड बना ले । सिर के अन्दर स्थित दिमाग बहुत महत्वपूर्ण है । असली वेल्थ इस दिमाग की है । इस दिमाग पर खर्च करो । पैरों से लेकर गर्दन तक के शरीर के भाग पर, इसके रख रखाव, रोटी, जूता, खाने पीने और कपडों पर जितना खर्च हर महीने करते हो, उतना ही खर्च हर महीने दिमाग पर करते रहो । ये पैसा दिमाग फंड के नाम से जमा करते रहो ।

-समय

-पैसे से ज्यादा महत्वपूर्ण अगला खर्च है, समय । समय एक बड़ा खजाना है । पैसा खर्च करना एक बात है लेकिन समय खर्च करना दूसरी बात है ।

-समय का कोई शार्ट कट नहीं है, जब तक दिमाग में ज्ञान डालने वाली मशीन ना बन जाये । तब तक आप को खुद प्रयास करना होगा । खुद पढ़ना होगा । रोटी हमें ही खानी पड़ती है । हमारी जगह कोई और रोटी खा ले और ताकत हमें आ जाये ऐसा नहीं होता । ऐसे ही पढ़े कोई और तथा ज्ञान हमारे दिमाग में नहीं आयेगा ।

-आप समय का जो निवेश करते है वह उपलब्धि बन जाता है ।

-आप को प्रयास का निवेश करना चाहिये ।

-बेध्यानी से सीखने में बहुत कोशिश करनी पड़ती है । इस से भी ज्यादा कोशिश गम्भीरता से सीखने में करना पड़ता है ।

-एकाग्रचित्त मस्तिष्क एक राईफल शाट की तरह है । इतना एकाग्रचित्त बनने के लिये बहुत प्रयास की जरूरत होती है ।

-यही प्रयास उस बाँध के पट खोल देगा जहां महान विचार अपना खास जादू कर सकते है और आप को दौलत और खुशी के ज्यादा करीब पहुंचा सकते है ।

-इसलिये जैसे और कामों के लिये धन रखते है ऐसे ही हमें दिमाग को तेज करने लिये भी धन रखना चाहिये और खर्च करना चाहिये ।

-भविष्य में दिमाग को किन्न् किन्न् क्षेत्रों में विकसित करना है इसकी योजना बना कर रखो ।

-मनोबल द्वारा अमीर बने -38

-समय प्रबंधन और न्यूटन की गति का पहला नियम

-जो चीज़ जिस अवस्था में है, उसी में बनी रहती है, जब तक कि उस पर बाहरी बल प्रयोग ना किया जाये । यह गति का पहला नियम है ।

-यह वस्तुओं पर ही नहीं व्यक्तियों पर भी लागू होता है ।

-आप जिस अवस्था में है, उसी में रहेंगे, जब तक कि बाहरी बल प्रयोग ना हो ।

-यह बाहरी बल कहां से आता है ।

-यह बल दूसरो के दबाव से या आप के अनुशासन से या आप की स्व प्रेरणा से आता है ।

-आर्थिक लक्ष्य बनाये । यही आर्थिक लक्ष्य आप को निरंतर प्रेरित करता है कि आप अपनी वर्तमान अवस्था को बदल लें ।

-आप की आर्थिक स्थिति चाहे कैसी हो, आप अपने पर अनुशासन का प्रयोग कर के बदल सकते है ।

-अपनी आर्थिक स्थिति को बेहतर बनाने का काम आप को खुद ही करना होगा ।

-दूसरो को क्या पड़ी है, जो आप के जीवन को बेहतर बनाने के लिये आप पर दबाव डाले ।

-आदमी घड़ी में चाबी भरता है तो घड़ी को नहीं अपनी आवश्यकता के लिये भरता है ।

-दूसरे लोग आप की भलाई के लिये नहीं, बल्कि उनकी खुद की भलाई के लिये आप पर दबाव डालेंगे । वे आप से अपना काम निकलवाने के लिये आप पर दबाव डालेंगे । इसलिये ये बात अच्छी तरह समझ लो कि अनुशासन में रहने और मेहनत करने की ज़ुम्मेवारी आप की है ।

-जब आप सफलता की डगर पर बढ़ोगे तो बहुत से बाहरी विघ्न आप की प्रगति में बाधा डालेंगे, लेकिन आप को उनसे सावधान रहना है और अपनी गति को बरकरार रखना है ।

-अपने को अनुशासित करने के लिये याद रखो, अगर आप कोई ऐसी वैसी बात सुनें तो एक घंटा याद रहेगी, यदि देखेंगे तो एक दिन तक याद रहेगी, लेकिन करेंगे तो हमेशा याद रहेगी ।

-अनुशासन अर्थात् आप को अपने खुद के तथा दूसरों के व्यर्थ संकल्प, व्यर्थ बोल और व्यर्थ कर्म के प्रभाव से बचाना है ।

-सबसे ज्यादा विपरीत लिंग के प्रति बुरे आकर्षण से बचने के लिये अपने पर कड़ा पहरा देना है । सावधानी हटी तो दुर्घटना घटी ये याद रखना है । अगर आप ने अपने को अनुशासन में नहीं रखा तो अर्श से फर्श पर आते देर नहीं लगेगी । विधि बहुत आसान है भगवान को याद करते हुये विपरीत लिंग के प्रति भाव रखो हम एक ही परिवार के हैं । परिवार समझने से निस्वार्थ स्नेह पैदा होगा स्वार्थी आकर्षण नहीं होगा ।

-यदि आप अच्छे योगी बनना चाहते या खूब धन कमाना चाहते हैं तो ज्ञान, योग वा लौकिक शिक्षा वा लौकिक कार्य पर ही अपने को अनुशासित करें । बाकी चीजे आप का इंतजार कर सकती हैं ।

-ऐसे ही स्व प्रेरणा से भी बल उत्पन्न होता है जिस से हम बदलने लगते हैं ।

-स्व प्रेरणा अर्थात् सदा मन में याद रखो और मन ही मन दोहराते रहो कि - प्रसन्नता अधिक प्रसन्नता को लाती है । आनंद अधिक आनंद को, शांति अधिक शांति को, कृतज्ञता अधिक कृतज्ञता को, दयालुता अधिक दयालुता को और प्रेम अधिक प्रेम को आकर्षित करता है ।

-आप का काम अंदरूनी है । अपने संसार को बदलने के लिये आप को बस इतना ही करना है कि अपने अन्दर के अहसास को बदल लें । कितना आसान है ।

-दूसरो को बेहतर बनाने की इच्छा महान काम है, लेकिन आप ऐसा तभी कर सकते हैं जब आप उन्हें धमकाना छोड़ दें उन्हें स्नेह दें तथा खुद को और भी श्रेष्ठ बनाते चलें । एक बार कर के देखो आप को बहुत अच्छा लगेगा ।

-गति का पहला नियम सचमुच में हमें महान और अमीर बनाता है ।

आन्तरिक बल - 443

-मनोबल द्वारा अमीर बने -39

-समय प्रबंधन और सापेक्षता का नियम

-किसी मन पसंद व्यक्ति से स्नेह की बातें करते समय एक घंटा एक सेकेंड की तरह बीत जाता है । आग के अंगारे पर एक सेकेंड बैठना भी एक घंटे की तरह लगता है । यही सापेक्षता है ।

-सुख में रहते हुये हमें अपने बीते जीवन का 100 साल ऐसे लगता है जैसे कल की बात हो, कल ही तो पैदा हुये थे और देखते ही देखते समय बीत गया, परंतु पेट दर्द हो जाये तो एक मिनट ऐसे लगता है जैसे एक साल बीत गया है । यही सापेक्षता है ।

-कोई नाच गाने का प्रोग्राम हो तो व्यक्ति कितना तालीन हो जाता है । कोई पढ़ने लिखने या मेहनत का काम हो तो व्यक्ति कितना कतराता है ।

-सापेक्षता का नियम समय के संदर्भ में बहुत महत्वपूर्ण है ।

-समय वही रहता है बस हमारा नज़रिया बदल जाता है ।

-बच्चे जब वीडियो गेम खेलते हैं तो उन्हें भूख प्यास का अहसास नहीं रहता, उन्हें पता ही नहीं चलता कि कब दो घंटे बीत गये । दूसरी ओर जब बच्चे पढ़ते हैं तो उन्हें 100 काम याद आ जाते हैं और 15 मिनट में ही उन्हें लगता है कि बहुत समय हो गया है ।

-प्रिय और मन पसंद काम करते समय आप को समय का अहसास नहीं रहता, क्योंकि तब आप लय में होते हैं, जिसे फ्लो में रहना कहते हैं। इस में आप जो भी काम करते हैं वह सहज ही बेहतरीन होता है, क्योंकि आप बिना कोशिश किये सर्व श्रेष्ठ कार्य करते हैं।

-अच्छा यही होगा कि आप सापेक्षता के नियम को ध्यान में रख कर अपने काम को दिलचस्प बनाने के तरीके खोजें, ताकि आप लय में काम कर सकें।

-अपने सब से महत्वपूर्ण काम को दिलचस्प बनायें और दिलचस्प मानें।

-अगर आपको अपने काम से नफरत है तो ऐसे में आप एक घंटा काम करके ही थक जायेंगे और सोचने लगेंगे कि बाकी काम कल कर लेंगे।

-यदि आप अपने लक्ष्य को ध्यान में रखते हुये आज नया कीर्तिमान बनाना चाहते हैं तो आप को यह दिलचस्प लगेगा, जिस से आप में नई ऊर्जा का संचार होगा।

-कुछ दिलचस्प करें जिसमें आप का मन लगे। यदि काम नीरस है उसे दिलचस्प बनाने का कोई उपाय नहीं है तो किसी विशेषज्ञ से राय लें।

-यदि आप का सपना पर्याप्त शक्तिशाली है तो यह आपको आगे बढ़ने के लिये प्रेरित करता रहेगा।

-दूसरो को लगेगा आप दिन रात खाहमखाह मेहनत कर रहे हैं, जब कि आप को उनकी तरह मजे करने चाहिये, लेकिन आप को यह दिखेगा कि आप दिन रात मेहनत कर के अपने लक्ष्य की ओर बढ़ रहे हैं और वह समय जल्द आयेगा जब आप अपनी मनचाही मंजिल पर पहुंच जायेंगे और उसके बाद सारी जिंदगी मजे करेंगे। यही सापेक्ष है।

-अपने बेटे को आदमी बनाने में एक औरत को बीस साल लग जाते हैं और दूसरी औरत उसे बीस मिनट में मूर्ख बना देती है।

-जितना कान रस अच्छा लगता है उतना मन रस बुरा होता जायेगा।

-जितना आंखों से रस लेंगे उतना ही मन जलता रहेगा ।

आन्तरिक बल -444

-मनोबल द्वारा अमीर बने -40

-समय प्रबंधन और पार्किंसन का नियम

-मनुष्य के दिमाग में एक ऐसा सिस्टम है, जो मनुष्य से अपने आप काम करवाता है । आपको बस किसी काम को करने की ठान लेनी है कि फलानी तरीख तक मैं इसे कर लूंगा । या हर रोज़ यह यह काम करूंगा । इसे पार्किंसन का नियम कहते हैं ।

-हम किसी खुशी के कारण एक पार्टी देना चाहते हैं । हम ने आठ दिन के बाद सोमवार का दिन पार्टी के लिये फिक्स कर दिया तो जैसे जैसे पार्टी नज़दीकी आती जायेगी हमारी काम करने की गति बढ़ जायेगी और आखिरी दो दिन में बहुत सारे काम निपटा देंगे ।

-हमें सिर्फ सोचना है कि अमुक काम इस इस दिन इस समय तक करना है । सोचने के बाद अपने आप तैयारी में जुट जाते हैं ।

-इसी तरह परीक्षा के दिनों में विद्यार्थी परीक्षा की तैयारी में जी जान से जुट जाते हैं जबकि सारे वर्ष बहुत ढीला पुरुषार्थ करते हैं । आखिरी दो मास में पूरे साल का काम कर देते हैं ।

-कहीं जाने के लिए तारीख और समय निश्चित कर लेते हैं तो यात्रा से संबंधित सारी तैयारी आखिरी 1 दिन में पूरे जोर-शोर से करते हैं हम 5 दिन की तैयारी 1 दिनत में कर लेते हैं।

-ऑस्ट्रेलिया की क्रिकेट टीम ने 300 रन बनाए और भारत की टीम के लिये लक्ष्य हो गया 301रन प्राप्त करना । भारत की टीम इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए जी जान से जुट जाती है और इसे बहुत जल्दी प्राप्त कर लेती है । यह सब पार्किंसन के नियम के कारण होता है ।

- यह यह काम हम ज़रूर करेंगे तो हम सारे काम तीव्रता से निपटाने लगते हैं और उस दिन वह काम कर के बिल्कुल फ्री हो जाते हैं ।

-मैं सोमवार से सुबह 4:00 बजे उठूंगा देखना आप उठने लग जाएंगे अगर कभी नहीं उठ पाए तो भी कहते रहो मैं कल जरूर उठूंगा और सचमुच में आपका रूटीन बन जाएगा ।

-मैं 20 मार्च, 2018 से हर हफ्ते 2 पुस्तकें पढ़ लूंगा आप पढ़ने लग जाएंगे ।

-मेरा रोग अगले बुधवार तक खत्म हो जाएगा ऐसा नक्शा मन में सोचते रहेंगे तो आप बुधवार तक रोगमुक्त हो जाएंगे ।

-मेरा बेटा पांचवी से स्कॉलरशिप लेगा बस यह मन में दोहराते रहो और बच्चे को आवश्यक तैयारी कराते रहो देखना आपका बच्चा सचमुच में छात्रवृत्ति लेने लग जाएगा ।

-इस नियम का आध्यात्मिक विकास में प्रयोग करो ।

-मैं 8 अगस्त 2018 तक क्रोध मुक्त हो जाऊंगा ।

-किसी कारण उदासी आ रही है तब सोचो मेरी उदासी दो घंटे बाद खत्म हो जायेगी ।

-जब जब कोई विपरीत परिस्थिति आयेगी मैं तुरंत योग युक्त हो जाऊंगा ।

-ऐसा ही आप जो भी कुछ लौकिक आलौकिक अपने जीवन में चाहते हैं, वह खान पान, रहन सहन या कोई उपलब्धि हो, सिर्फ सोचो मैं फलाने समय तक प्राप्त कर लूंगा या होने लग जायेगा तो पारकिनसन का नियम अक्टिवेट हो जाता है और वह वह लक्ष्य प्राप्त कर लेंगे ।

-पारकिनसन नियम द्वारा सकारात्मक लक्ष्यों की प्राप्ति अप्रत्यक्ष रूप से आप को आर्थिक सम्पन्नता की ओर लें जा रही है ।

-मनोबल द्वारा अमीर बने -41

-समय प्रबंधन और 80/20 नियम.

-यह संसार विभिन्न तत्वों के अलग-अलग अनुपात से मिलकर के बना हुआ है ।

-आकाश जो हम देखते हैं यह सिर्फ 20% है बाकी 80 परसेंट अदृश्य है ।

-इसी तरह से संसार की जितनी भी चीजें हैं उन सब पर यही 80 और 20 का नियम लागू होता है ।

-हमारे शरीर में 20 परसेंट खून है और 80% पानी है ।

-सारे विश्व में जितना धन 20% लोगों के पास है उतना ही धन बाकी 80% लोगों के पास है ।

-दुनियां में जितने भी धार्मिक लोग है उनमे सिर्फ 20% योगी है बाकि 80% लोग नियमों पर पूरे नहीं उतरते ।

-इस नियम का यह मतलब है कि अगर हम किसी भी कार्य में सफलता चाहते हैं तो उस लक्ष्य से सम्बन्धित 20 % ज़रूरी कार्य पूरा करो जो बाकी 80% कार्य है वह कुदरत कहो, विज्ञान कहो या नियम कहो, अपने आप करता है ।

-हम कार ,रेलगाड़ी या हवाई जहाज या भारी चीजो को उठाने के लिये जैक का प्रयोग करते हैं । निर्माण कार्यों में क्रेन का प्रयोग करते हैं । कही दूर जाना हो तो कार आदि यूज करते हैं । संदेश भेजना हो तो मोबाइल या इंटरनेट प्रयोग करते हैं । इन सब साधनों पर हम सिर्फ 20% अपनी बुधि या पैसा या अन्य एनेर्जी या तकनीकी का प्रयोग करते हैं बाकी 80 % कार्य इन साधनों द्वारा अपने आप होता है । जिसके परिणाम स्वरूप आज संसार का विकास चरम सीमा पर हैं ।

-कहते हैं अगर हम एक रुपया दान करें तो भगवान बदले में 100 रुपया देता हैं ।

यह एक नियम हैं । हम गेहूँ का एक दाना उगाते हैं तो उस से उपजे पौधे से लगभग 1000 दाने मिलते हैं । यह प्रकृति का नियम है ॥

-ऐसे ही 80/20 नियम को अपने जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में प्रयोग करके हम मनचाहे लक्ष्य पा सकते हैं । हमें सिर्फ प्रत्येक लक्ष्य से सम्बन्धित 20 % स्मार्ट कार्य पूरा करना है बाकी का 80% कार्य यह नियम अपने आप कर देगा ।

-यदि आप बिजनेसमें हैं तो 80/20 का नियम प्रयोग करके आप अपने बिजनेस को अच्छा करने की कोशिश कर सकते हैं । उन कार्यों को ज्यादा करो जो आपके बिजनेस को सफलता की ऊंचाइयों तक ले जाएं । माल सस्ता हो, बढिया हो हर एक की पहुंच में हो ।

-यदि आप स्टूडेंट हैं तो 80/20 नियम का उपयोग कर के अपनी स्टडी को बेहतर करने के लिए कीजिए उन टॉपिक्स पर ध्यान दीजिए जो आपको अच्छे परिणाम दे सके । एक्सपर्ट्स की कोचिंग लें, हेल्प बुक्स पढ़ें और नोट्स बनायें । हरेक विषय को हर रोज़ समय देना है ।

-आप अपने रिलेशनशिप को अच्छा करने के लिए 80/20 का नियम प्रयोग कीजिए और उन पर अधिक समय दीजिए जो आपको हैप्पी न्यू ईयर देते हो या जो आपके दुख में आपका साथ देते हो । आप को शाबाश देते हो । उन लोगों से बचो जो डांटते हैं , जो डिस्करेंज करते हैं, मनोबल तोड़ते हैं ।

-अपनी दिनचर्या डेली रूटीन को बेहतर बनाने के लिए 80/20 रूल का उपयोग कीजिए उन कार्यों को टाइम दीजिए जो आपको अच्छे से रिज़ल्ट देते हो । सैर करो, अच्छा भोजन करो, प्रेरणादायक सत्संग सुनो ।

-अपनी सोच को अच्छा करने के लिए आप 80/20 का रूल उपयोग कीजिए अपने उन दोस्तों और अन्य लोगों से अधिक कांटेक्ट में रहिए जो आपको खुशी देते हो वह जो समय पर आपकी हेल्प करते हो और जो चरित्रवान हो ।

-80/20 प्रिंसिपल आपसे कभी यह नहीं कहता कि आप कार्य करना स्टार्ट कर दें बल्कि यह नियम बताता है कि हमें उन कार्यों को नहीं करना चाहिए जिनमें हमारा 80% टाइम वेस्ट होता है ऐसे कार्य

न करने से हमारे पास काफी समय बचेगा और इस बचे हुए समय का उपयोग हम ऐसे कामों में करें जिससे 80% रिजल्ट मिलता है। निन्दा चुगली से बचना । नेट का गलत इस्तेमाल ना करना । समय नष्ट करने वाले दोस्तों से बचना ।

-आज से 80/20 का रूल टाइम मैनेजमेंट में शुरू कर दो और याद रखो अच्छे काम में देर नहीं करनी चाहिए आप स्टार्ट करें सफलता आपके साथ हैं ।

-हमारा दिमाग एक शक्ति का भंडार है अभी तक कोई भी महान व्यक्ति इस का 20 परसेंट प्रयोग कर सका है । बाकी 80 परसेंट दिमाग सोया पड़ा है अर्थात 80% शक्तियों का कोई उपयोग नहीं हुआ । अगर आप धनवान बनना चाहते हैं तो अपनी 20 परसेंट शक्ति को अच्छे कार्य में लगाओ बाकी 80% अच्छा रिजल्ट अपने आप मिलने लगेगा । इसके लिये सिर्फ शांति और प्रेम के संकल्पों में रहो, भगवान को याद करते रहो, किसी का भी तन, मन और धन से नुकसान नहीं करना ।

-80/20 के नियम से अपने जीवन के विभिन्न पहलुओं को विकसित करते रहो । यह सारे प्रयास आप के सामने आर्थिक सम्पनता के रूप में प्रत्यक्ष आयेगें ।

आन्तरिक बल - 446

-मनोबल द्वारा अमीर बने - 42

-समय प्रबंधन और सैर

-लोग सोचते हैं कि उनके पास शरीर के व्यायाम के लिए समय नहीं है, ऐसे लोगो को देर सवेर बीमारी के लिए समय निकालना ही पड़ेगा ।

-आज मानव दूसरों को खुश करने के लिए नौकरी करता है । खाना उसे पत्नी या बच्चों की पसंद का खाना पड़ता है । TV पर उसे दूसरों की पसंद के कार्यक्रम देखने पड़ते हैं ।

वह अपने लिए तो समय निकाल ही नहीं पाता ।

-अगर आप जीवन मे लौकिक या आध्यत्मिक सफलता चाहते है तो आपको हर दिन एक घंटा खुद के लिए समय निकालना ही होगा ।

- इस 1 घंटे में आपको अपने शरीर की देखभाल करनी चाहिए ।

-शरीर की बदौलत ही आप अपने सारे काम कर रहे हैं अगर यही स्वास्थ्य ना रहे तो आप इस सुंदर संसार का आनंद कैसे ले पाएंगे ।

-यही तो वह मुर्गी है जो रोज आपको सोने के अंडे देती है और आप हैं कि इसी का पेट चीरने पर आमदा है।

- आप सुबह से शाम तक स्वादिष्ट और अस्वास्थ्यकर चीजें खाते रहते हैं जिनकी शरीर को जरूरत ही नहीं होती और जिस की जरूरत होती है उसे आप कभी करते नहीं ।

- अगर शरीर का ध्यान रखने के लिए समय नहीं निकाला तो बाकी समय और जीवन भी खतरे में पड़ जाएगा इसलिए इस सिद्धांत को ध्यान में रखते हुए आपको अपने व्यायाम के लिए समय निकालना होगा ।

- यह एक निवेश है जिस का कई गुना फल मिलेगा । इस 1 घंटे में आपको अपने शरीर की देखभाल करनी है ।

- योगा क्लास या जिम जाना है अपने शरीर की मालिश करनी है स्वास्थ्य पर ध्यान देना है इससे आपका स्वास्थ्य अच्छा रहता है। बीमारी पर कीमती समय नष्ट नहीं होगा और दिमाग में भी चुस्ती आ जाती है । आलस दूर हो जाता है और अपने कार्य पूरे जोश से करने में जुट जाते हैं

-यदि आप पैदल चलकर व्यायाम कर रहे हैं तो इसके लिए आपको दूरी और समय का सही मिश्रण करना होगा । आदर्श घूमना होता है 50 मिनट में 5 किलोमीटर । पैदल चलने के लिए सही समय सूर्य निकलने के पहले रहता है क्योंकि उस समय वातावरण में प्रदूषण नहीं होता और ताजा आक्सीजन आपके फेफड़े और दिमाग में पहुंचकर आपको ताजगी से भर देती है।

- छत की मरम्मत करने का समय तब होता है जब सूरज चमक रहा होता है। बुढ़ापे में नही जवानी में ही सैर शुरू करनी चाहिये ।

- आध्यात्मिक रुझान वाले व्यक्ति कई बार शरीर को बेकार मानने के शिकार हो जाते हैं जिस से उन्हें तरह तरह के रोग लग जाते हैं । महान लोगो को कैंसर आदि की बीमारी के कारण देह तक त्यागनी पड़ी जिस से संसार को भारी क्षति सहनी पड़ी ।

- शरीर और आत्मा एक दूसरे से जुड़े हैं । शरीर वा मन एक दूसरे को प्रभावित करते हैं । यदि मन अस्वस्थ है तो शरीर को भी खराब होते देर नहीं लगेगी इसी प्रकार यदि शरीर रोग ग्रस्त हैं तो मन में भी गिरावट होगी । अगर शरीर मे रोग है तो आप सिद्ध पुरुष नही बन सकेगे । आप का योग नही लगेगा ।

- शरीर मे रोग आ गया तो न खाने का सुख न सोने क सुख न ही कोई कार्य कर सकेगे और आप की खून पसीने की कमाई डॉक्टर खायेगे । अगर आप धनवान बनना चाहते हैं तो शरीर को निरोगी रखो ।

- शरीर को निरोगी रखने का सहज साधन है, कम से कम 6 घंटे विश्राम करना है, हर रोज कुछ न कुछ नया पढ़ना है, हर कार्य करते हुये ध्यान का अभ्यास करना है और एक घंटा व्यायाम जरूर करना है । आप को पोषण पर ध्यान देना है कभी फास्ट फूड नही लेना और व्यायाम के लिए प्रतिबद्ध रहना है।

- याद रहे जान है जहांन है तथा पहला सुख निरोगी काया ही है ।

-मनोबल द्वारा अमीर बने -43

-भगवान की याद द्वारा स्वास्थ्य की प्राप्ति ।

-मनुष्य में अपने शरीर को स्वस्थ करने की अद्भुत योग्यता है । परंतु यह योग्यता हम भूल चुके हैं ।

-छिपकली अपनी टूटी हुई पूंछ को फिर से उगा लेती है। केकड़े अपने पांव टूट जाने पर फिर उगा लेते हैं । वह इन उपायों का प्रयोग अपनी सुरक्षा वा भोजन जुटाने के लिए भी करते हैं । अतः वह इन्हें खोकर जीवित नहीं रह सकते । उनके इन कैंची जैसी टाँगों की संरचना बहुत जटिल होती है और इन अंग को पुनः निर्मित कर लेने का उनका गुण ईश्वर द्वारा प्राप्त है ।

-मनुष्य शरीर मांसपेशियों से बना है और प्रत्येक व्यक्ति अपनी इच्छा शक्ति से अपनी मांसपेशियों को हिला डूला सकता है ।

-यदि आप अपने शरीर को रोग मुक्त करने की तीव्र इच्छा बनाए रखते हैं तो आप अपने शरीर की कोई भी मांसपेशी को वास्तव में ठीक कर सकते हैं।

-बुरे विचारों की शक्ति कैंसर जैसे रोग लगा देती है और अगर हम अच्छे विचार रखे तो यह असाध्य रोगो को ठीक भी कर सकती है ।

-तनाव आदि से पेट की आंतडिया , लीवर या अन्य आंतरिक अंग कमजोर हो जाते हैं और इन अंगों की क्रियाएं भगवान की याद की शक्ति से बदली जा सकती है ।

-भगवान की याद से इन अंगो की कमजोरी दूर हो जाती है और वह शक्तिशाली हो जाते हैं ।

-हां जिन मामलों में मस्तिष्क कमजोर होता है समस्या थोड़ी अधिक जटिल होती है ।

-मस्तिष्क को मजबूत बनाया जा सकता है परंतु इसके लिए पढ़ना व कुछ योजनाबद्ध कदम उठाना आवश्यक है¹

-यदि आप 1 दिन में सौ सिगरेट पीते हैं और प्रार्थना करते हैं कि मेरा फेफड़े का कैंसर ठीक हो जाए तो यह ठीक नहीं होगा क्योंकि हम प्रकृति के नियम को फॉलो नहीं कर रहे हैं । प्रकृति का नियम यह है कि आप को सिगरेट त्यागनी होगी । जिसे साधारण भाषा में कहते हैं परहेज करना होगा ।

- कलेस्ट्रॉल आप के शरीर में बनता है, ऐसीडिटी बनती है, गैस बनती है तो ये रोग सिर्फ भगवान की याद से खत्म नहीं होंगे जब तक आप प्रकृति के नियमों अनुसार इन रोगों से सम्बंधित चीजों का परहेज नहीं करेंगे ।

-यही नियम आपकी आंखों पर, कानों पर, पैरों पर और शरीर के अन्य अंगों पर भी लागू होता है ।

-भगवान की याद से हम प्रत्येक रोग ठीक कर सकते हैं सिर्फ हमें प्रकृति के नियमों को भी समझना होगा । ईश्वर प्रकृति के नियमों के विपरीत कार्य नहीं करते ।

-लोग प्रकृति के विपरीत चलते हैं और प्रार्थना से चमत्कार की आशा करते हैं और चमत्कार घटित नहीं होता जिस से ईश्वर पर भरोसा खत्म हो जाता है ।

-आत्मा, परमात्मा और प्रकृति एक दूसरे को प्रभावित करते हैं परंतु ये एक दूसरे के नियमों के विपरीत नहीं जाते । इस लिये इन तीनों के नियमों को गहराई से समझना है ।

-भगवान की शक्ति के साथ साथ इसके नियमों को फॉलो करो आप हर प्रप्ति कर सकते हैं । आप को निरोगी काया मिलेगी और श्रेष्ठ शरीर से आप हर प्रप्ति और खासतौर पर मनचाही अमीरी प्राप्त कर सकेगी ।

-आप को कोई भी शरीरिक या मन से सम्बंधित अगर कोई रोग है तो एक तो उस रोग से सम्बंधित नियमों को पढ़ो । तब तक आप भगवान या आप का इष्ट जो भी है उसका फोटो सामने देखते हुये

मन मे दोहराते रहो आप की कृपा से मैं ठीक हो रहा हूँ, मैं पहले से ठीक हूँ और तंदरुस्त हो जाऊँगा ।

आंतरिक बल -448

-मनोबल द्वारा अमीर बने - 44

-अमीर कौन है ?

-आप धनवान किसे मानते हैं । आप की नजर मे धनवान व्यक्ति की परिभाषा क्या है ? इंसान को क्या क्या हासिल कर लेना चाहिए, जिस से उसे धनवान कहा जा सके ?

-क्या आप के हिसाब से अमीर उसको कहेंगे, जिस के पास बेशुमार दौलत है, सुंदर महल, अनेक लम्बी चौड़ी गाड़ियां, पहनने के लिये हजारो तरह तरह के सूट हैं और सेवा के लिये कई नौकर चाकर हैं ।

-क्या बड़े बड़े ऑफिसर, बड़े बड़े उद्योगपति, राजनेता अमीर है ।

-वास्तव मे अमीर उसे कहेंगे ।

-आप डॉक्टर है, वकील है, इंजिनियर है, जमींदार है, कलाकर है या और कुछ काम करते हैं । आप की हर महीने की जितनी भी आय है, उस मे से एक रुपया भी खर्च न हो और आप के सारे कार्य चले आप की सारी आवश्यकताये पूरी हो, कोई कंजूसी न हो, उसे कहेंगे कि वह पैसे वाला व्यक्ति है ।

-आप की जो भी आय है, उसे अगर बैंक मे फिक्स्ड डेपॉजिट मे डाल दिया जाये और उस फिक्स्ड डेपॉजिट से जो ब्याज मिलता है, उस ब्याज को फिर फिक्स्ड डेपॉजिट मे डाल दे, इस दूसरे फिक्स्ड डेपॉजिट से जो ब्याज मिले, उस ब्याज से हमारे जीवन के सभी कार्य चले, उसे कहेंगे कि ये अमीर आदमी है ।

-अमीरी एक चक्र मे चलती है ।

-कोई भी व्यक्ति चाहे वह कितना भी गरीब हो अमीर बन सकता है ।

-अगर आज से हम अमीरी के नियमो पर चलना आरम्भ कर दे तो 33.1/3 वर्ष के बाद हम करोड़पति होंगे ।

-अमीरी सात पीढियो के चक्र मे चलती है । पहली पीढी अगर मजदूरी की स्टेज मे है तो दूसरी पीढी मेहनत करके के धन दौलत बनायेगी । तीसरी पीढी काफी धन दौलत से सम्पन्न हो जायेगी । वह इतनी धन दौलत बना लेगी कि चौथी पीढी विलासता का जीवन जीयेगी । 5वी पीढी कमजोर होगी । 6वी पीढी गरीब होगी । 7वी पीढी मजदूरी पर पहुच जायेगी । फिर से पहली पीढी दूसरी और तीसरी पीढी मेहनत करेगी और 4थी पीढी विलासता का जीवन जीयेगी ।

-आसान शब्दो मे आप अमीर तब बनेगे जब आप पैसे से काम करवायेंगे । कोई भी व्यक्ति 24 घन्टे काम नही कर सकता परंतु पैसा आप के लिये 24 घन्टे काम करता है । आप पार्टी मे है, आप बीमार है, आप सो रहे है परंतु पैसा आप के लिये काम कर रहा है ।

-अतः पैसा घर रखने के बजाये बैंक मे रखो और पैसे से काम करवायें ।

-अगर आप पैसे से काम नही करायेगे तो आप मजदूर ही कहलायेगे चाहे आप की आमदनी लाखों रुपये हो ।

अंतरिक्ष बल -450

-मनोबल द्वारा अमीर बने -46

-चक्रवृद्धि ब्याज आठवाँ अजूबा

-विश्व मे एक ऐसी संस्था है जिसकी कोई इंडस्ट्री नहीं है, कोई उत्पाद नहीं है, कोई खेती नहीं, उसकी कोई निजी सम्पति मकान आदि नहीं है, उसके ऑफिस प्राय किराये पर हैं फिर भी सारे विश्व मे धनाड्य है । इस में काम करने वाले कर्मचारी सब से ज्यादा तनख्वाह लेते है ।

-ऐसी संस्था को आप भी जानते है । यह संस्था है बैंकस । बैंकस हर शहर मे उपलब्ध है ।

-बैंकस का धनी होने का रहस्य है ब्याज । बैंक हमारे से पैसे लेता है और उसके बदले हमे बहुत कम ब्याज देता है । वहीं जब हम बैंक से लोन लेते हैं तो बैंक हमारे से बहुत ज्यादा ब्याज लेता है ।

-यह ब्याज कहने मे तो बहुत साधरण शब्द है, लगभग सभी व्यक्ति जानते है, परंतु इस का वास्तविक महत्व नहीं जानते ।

-इस के बारे हमे ज्ञान है परंतु जीवन मे नहीं है ।

-अगर हम इसे जीवन मे लागू कर सके तो हरेक व्यक्ति आत्म निर्भर बन सकता है ।

-आज व्यक्ति के पास मकान है प्लॉट है, जमीन है, इंडस्ट्री है और इस हिसाब से लोग लखपति है करोड़ पति है परंतु वास्तविक जीवन मे गरीब हैं, क्यो कि उन्हें रोजी रोटी के पीछे भागना पड़ रहा है । उन के पास रोजाना के घर के खर्चों के लिये पैसे नहीं है ।

-हमे ऐसा प्रबंध करना चाहिये कि हमारे पास रोजाना के खर्चों के लिये पैसे के बारे सोचना ना पड़े । हमारे खाते मे हर मास की पहली तरीख को अपने आप पैसे जमा हो जायें ।

-इसके लिये हमे कुछ धन बैंक मे जमा रखना चाहिये और उस से जो ब्याज मिलती है उस से घर के खर्चें निकाल सके ।

-इसके लिये आप को चक्रवृद्धि ब्याज का फार्मूला आना चाहिये ।

-चक्रवृद्धि ब्याज दुनिया का आठवाँ अजूबा है । अगर इस अजूबे को समझ गये तो आप को निवेश की कला भी आ जायेगी । तथा आप अधिक से अधिक समय के लिये निवेश करना भी सीख जायेगे ।

-निवेश की शुरुआत जितनी जल्दी की जाये, चक्रवृद्धि का लाभ उतना ही अधिक मिलेगा । चक्रवृद्धि के लाभ के लिये निवेशित धन और समय सीमा अहम होती है । निवेश की गई छोटी राशि भी चक्रवृद्धि की बदौलत बड़ी राशि बन जाती है ।

आंतरिक बल - 449

-मनोबल द्वारा अमीर बने -45

-जितना निवेश, उतना धनवान

--अगर आप गरीब पैदा होते हैं तो यह आप का भाग्य है, लेकिन अगर आप गरीब ही दुनिया छोड़ जाते हैं तो यह आपकी गलती है ।

-जितना गुड डालोगे उतना ही मीठा होगा ।

-कोई व्यक्ति जितना निवेश करेगा, उतना ही अमीर होता चला जायेगा ।

-वह लोग गरीब हैं जो इन्वेस्टमेंट नहीं करते । अगर इन्वेस्ट करते भी हैं तो डर डर कर ।

-इन्वेस्टमेंट जितनी ज्यादा होगी निवेश जितना अधिक होगा, व्यक्ति उतना ही बड़ा धनवान होगा ।

-हरेक व्यक्ति अगर आज से ही अपनी आमदनी का 10% बैंक मे फिक्स्ड डेपॉजिट कराये या रेकरिंग डेपॉजिट करवाये और यह पैसा 33 साल तक निकलवाये नहीं तो 33 साल के बाद यह इतना ज्यादा हो जायेगा कि आप इसकी ब्याज से घर के सारे खर्चे निकाल लेंगे ।

-कभी आप को पैसे की जरूरत पड़े तो इस धन पर आप बैंक से लोन लेवे । बैंक आप से थोड़ी ब्याज लेगा । दूसरे शब्दों में आप अपने को ही ब्याज दे रहे हैं । आप धीरे धीरे अपनी किश्तें जमा कराते रहेगे । आप का पैसा बरकरार रहेगा ।

-इस तरह बच्चे, मातायें और बुजुर्ग भी धनवान बन सकते हैं ।

-बच्चों या विद्यार्थियों को जो जेब खर्चा मिलता है या दूसरे कार्यों के लिये पैसे मिलते उस में अपनी समझ से बचत करो और घर में अपनी पर्सनल गोलक में डालते रहो । जब यह 500 रुपये हो जाये तो उसे बैंक में जमा करवा दो । जब यह राशि 5000 से ज्यादा हो जाये तो इसे फिक्स्ड डेपॉजिट में डाल दे ।

-आप जिस भी तरीके से बचत कर सकते हैं, बचत करें । यदि आप एक दिन में एक रुपया बचाते हैं तो यह समझो आप ने एक रुपये की अतिरिक्त कमाई की । यह कमाई एक साल में 365 रुपये हो जाती है ।

-यदि आप एक दिन में 20 रुपये पान बीड़ी व सिगरेट में उड़ा देते हैं तो समझ लो साल भर में 7200 रुपये खर्च कर देते हैं ।

-यदि आप इस 7200 रुपये की राशि को 10% की दर से बैंक में रख देते हैं तो 7 साल 2 मास में यह राशि दुगुनी हो जायेगी ।

-प्रति मास 1000 रुपये तीस साल तक जमा करते हैं तो 3 लाख 60 हजार रुपये जमा हो जाते हैं । इसके बदले में बैंक आप को लगभग 15 लाख रुपये देगा । यह सब कमाल मेंजिक ऑफ सेविंग/ब्याज का है ।

आंतरिक बल - 451

-मनोबल द्वारा अमीर बने -47

--चक्रवृद्धि ब्याज के महत्व को हम उदाहरण द्वारा समझ सकते हैं ।

- आज अगर ब्याज 8% है तो किसी भी राशि को दोगुना होने में नौ वर्ष लगेंगे ।

- सहज गणना के लिये 9 वर्षों की बजाए हम मान लेते हैं कि कोई राशि 10 वर्ष में दोगुनी होती है।

- हम अगर आज दस हजार रुपये फिक्स डिपोजिट में जमा करते हैं तो यह राशि 10 साल में 20 हजार हो जाएगी

-यही राशि 20 साल में 40 हजार हो जाएगी और 30 साल में 80 हजार हो जाएगी

-40 साल में 1 लाख 60 हजार हो जाएगी और 50 साल में यह राशि 3 लाख 20 हजार रुपये हो जाएगी ।

-60 साल में यही राशि 6 लाख 40 हजार रुपये बन जाएगी और 70 साल में यह राशि 12 लाख 80 हजार रुपये हो जायेगी ।

- दूसरा उदाहरण

-आज अगर हम एक लाख रुपये जमा कराते हैं तो 10 साल में यह राशि 2 लाख हो जाएगी

- 20 साल में यह राशि 4 लाख हो जाएगी और 30 साल में 8 लाख बन जाएगी

-40 साल में यह राशि 16 लाख बन जाएगी और 50 साल में 32 लाख बन जाएगी

- 60 साल में यह राशि 64 लाख बन जाएगी और 70 साल में एक करोड़ 28 लाख बन जायेगी ।

- इन उदाहरणों से स्पष्ट है कि कोई राशि फिक्स डिपॉजिट में डाली जाये तो यह 30 वर्ष के बाद बहुत तीव्रता से बढ़ती है ।

-इसलिए अगर चक्रवृद्धि ब्याज का बढ़िया फायदा उठाना चाहते हैं तो कुछ निवेश 50-60 वर्ष तक या इस से ज़्यादा समय तक रखना चाहिए

-अगर 10 हजार की फिक्स्ड डेपॉज़िट 150 साल तक कर दी जाये तो यह राशि 3174 लाख बन जायेगी । क्या यह अजूबा नहीं है ।

-अगर एक लाख रुपये 150 साल तक फिक्स्ड डेपॉज़िट में डाल दी जाये तो यह राशि 321 करोड़ बन जाती है । यह वाक्य ही 8वां अजूबा है ।

आंतरिक बल -452

-मनोबल द्वारा अमीर बने -48

-हरेक व्यक्ति चाहता है उसको रोजाना के खर्चों के लिये जितने धन की जरूरत पड़ती है उतना धन मिलता रहे । उसे सोचना न पड़े पैसे कहाँ से आये ?

-यही समस्या धार्मिक संस्थाओ, समाजिक संस्थाओ, सरकारी संस्थाओ, शिक्षण और शोध संस्थाओ की ही है, उन्हे हर मास दान लेना पड़ता है, सरकार से मदद लेनी पड़ती है ।

-यहां हमे विश्व के आठवे अजूबे चक्रवृद्धि ब्याज के महत्व को समझना होगा और इस का लाभ उठाना होगा ।

-इसके लिए हमें फिक्स्ड डिपोजिट करनी चाहिए और वह भी एक चेन/चक्र में जमा करनी चाहिए

-संसार एक चक्कर में चल रहा है धरती घूम रही है, जल चक्कर में घूमता है, कोई भी यातायात का साधन हम यूज करते हैं उसके पहिये भी घूमते रहते हैं ।

-दिन और रात भी एक चक्कर में आते और जाते हैं। प्रकृति की कोई भी चीज एक सर्कल में चलती है ऐसे ही हमें धन को भी एक चक्र में निवेश करना है ।

- यह निवेश 1 से 9 वर्ष का हो सकता है।

- पहले वर्ष एक नियत मास में एक लाख रुपये 9 साल के लिये फिक्स डिपॉजिट में डालो ।

- दूसरे वर्ष फिर उसी मास में एक लाख अगले 9 साल के लिये फिक्स डिपॉजिट में डालो ।

-इसी तरह तीसरे, चौथे, पाँचवे, छठे, सातवे, आठवे और नौवें वर्ष नियत मास में हर अगले 9 वर्ष के लिये निवेश कर दो ।

-दसवें वर्ष में आप ने जो पहले वर्ष निवेश किया था वह मचयोर हो जायेगा और आप को दो लाख रुपये मिलेंगे । इन दो लाख में से एक लाख आप फिर से 9 साल के लिये जमा कर दो । बाकी एक लाख रुपया आप अपने सेविंग खाते में जमा कर दो और वहाँ से जरूरत अनुसार मासिक खर्च करते रहो ।

-इस तरह आप को अगले वर्षों में हर साल दो दो लाख मिलते रहेंगे उसमें से एक एक लाख आप अगले हर 9 साल के लिये जमा करते रहो और हर साल एक लाख अपने सेविंग खाते में रोटिन खर्चों के लिये निकालते रहो ।

-इस विधि से आप को हर वर्ष जब तक यह दुनिया है एक लाख इनकम के रूप में मिलता रहेगा ।

-इस चक्र को टूटने मत देना ।

-इस चक्र को आगे बढ़ाते रहना इस तरह आप इस दुनिया से चले जायेंगे तब भी आप की संतानों को एक लाख हर वर्ष आय प्राप्त होती रहेगी ।

-यह जमा की राशि आप कम ज्यादा अपनी सुविधा अनुसार कर सकते हैं, बस आप की इनकम उसी अनुसार कम ज्यादा हो जायेगी ।

-चक्रवृद्धि ब्याज के नियम का लाभ उठा कर प्रत्येक व्यक्ति आर्थिक सम्पन्नता प्राप्त कर सकता है ।

आंतरिक बल - 453

-मनोबल द्वारा अमीर बने -49

-खुद से लोन (कर्ज) लें ।

-जीवन स्तर को उंचा उठाने के लिये प्रत्येक व्यक्ति को घर के कार्यों के लिए पैसों की जरूरत पड़ती है और हम बाजार से उधार चीजें लेकर आते हैं जिस पर ब्याज चुकाना पड़ता है और इस तरह सारी जिंदगी कर्ज उतारते रहते हैं ।

-इस कर्ज से छुटकारा पाया जा सकता है ।

-अगर आप सरकारी या प्राइवेट कम्पनी में कर्मचारी हैं तो जरूर आपका GPF या CPF कटता होगा ।

- आप सीपीएफ या GPF से रिफंडेबल लोन ले लो और घर की सारी चीजें जो भी आप चाहते हो खरीद सकते हो ।

-आप का एंप्लायर आप की तनखाह से हर महीने कुछ रूपये काटता रहेगा और आप के GPF में जमा हो जायेगा । इस ढंग से आपके GPF में कोई कमी नहीं आएगी और आप की जितनी भी जरूरतें हैं पूरी हो जाएगी ।

-अगर आपके पास यह फंड नहीं है तो आप एक लाख या दो लाख की बैंक में FD खोल दो ।

-जब भी कभी आपको किसी खर्च की जरूरत पड़े तो आप अपनी FD के अगेंस्ट लोन ले लो और अपने घर की सारी आवश्यकता पूरी कर लो ।

- आप पैसे कमा कर किशतों के रूप में बैंक में जमा कर दो । बैंक आप से सिर्फ आधा पर्सेंट ब्याज ज्यादा लेगा ।

-आपकी FD राशि में कोई कमी नहीं आयेगी । यह मैच्यूरिटी पर उतनी ही होगी जितनी अगर आप लोन न लेते तो होती ।

-इज तरह आप घर की सभी चीजे भी बना लेंगे और पैसे भी पूरे रहेंगे ।

--ऐसे ही घर के, बच्चों की शिक्षा आदि या कोई भी और कार्य करना चाहते हैं तो बैंक या प्राइवेट लोगों से उधार कभी नहीं लेना चाहिये । आप अपनी FD या GPF या CPF से रिटर्नएबल लोन लो । जितना मर्जी जीवन स्तर उठाओ और अपने पैसे भी भरपूर रखो ।

-यही नियम संस्थाओं पर भी लागू होता है ।

आंतरिक बल - 454

-मनोबल द्वारा आमीर बने -50

-धनवान बनने के लिये जरूरी बातें ।

-धनवान बनने के लिये आप को काम करना होगा । अगर आप बेरोजगार हैं और आप को कोई अगर 100 रुपया देता है तो आप वह काम तब तक जरूर करें जब तक इस से बढ़िया काम नहीं मिल जाता ।

-आप शुरू से ही बचत करना सीख लें । बचत करने का गुण आप जितनी जल्दी सीख लेंगे, उतनी ही जल्दी आप इसके लाभ भी हासिल करना शुरू कर देंगे.

-आपको अपनी पाकेट मनी का 15 से 20% हिस्सा जरूर बचाना चाहिए । जब आप अपने थोड़े पैसे भी बचाओगे तो यही पैसे आपके एमरजेन्सी के समय काम आयेंगे ।

-आप हर रोज कम से कम 10, 20, 30, 40, 50 या ज्यादा से ज्यादा बचत करेंगे और 33 साल तक इस आदत को जारी रखना है । जैसे जैसे आप की आमदनी बढ़े अपनी बचत बढ़ाते जाओ ।

-साल के बाद इस बचत को फिक्स्ड डेपॉजिट में डाल दो ।

-जब कभी कोई जरूरत आ जाये तो इस फिक्स डेपॉजिट पर लोन ले ।

-अपनी बचत बैंक या पोस्ट ऑफिस में जमा करें । इन दो संस्थाओं के इलावा किसी अन्य संस्था में पैसा न लगायें ।

-राशन, बिजली का बिल, अपने इंटरनेट कनेक्शन, मोबाइल बिल और बच्चों पर खर्च तथा इसी प्रकार की अन्य छोटी - छोटी चीजों का भी ध्यान रखें और उनमें से अपने पैसों को बचाएँ । पेड चेनलों से बचें ।

-मोबाइल, कपड़े, जूते और घर के ऐसे ही सामान टी वी आदि में अगर कुछ खराबी हो जाती है तो उसे ठीक कर लें । अगर आप इसी वस्तु को नया लाओगे तो आपको काफी खर्च करना पड़ सकता है जो आपकी बचत को प्रभावित करेगा ।

-आप अगर बिजली की बचत करना सीख गये तो आप अपने धन की बचत कर सकते हैं । जितनी ज्यादा बिजली की बचत करोगे उतनी ही आपकी पैसों की बचत होगी। रात को 10 से 4 बजे तक फ्रिज बंद रखें । पानी की टंकी धरातल पर रखें ताकि कि सप्लाई आने पर बिना मोटर भर जाये । ए सी थोड़ी देर चला कर पंखे कूलर से काम लें । सामान्य बल्ब के बजाय सीएफएल या एलईडी लाइटों का प्रयोग करें। सोलर ऊर्जा का प्रयोग करें ।

-शादी आदि में अपने रिश्तेदारी में कुछ लेंन देना पड़ता है । यह अधिक से अधिक दो । जब आप के घर शादी होगी तो वह सब आप को भी उसी अनुपात में देंगे और आप को लाखों की मदद हो जायेगी ।

-अपने विकास के लिये, अपने बड़ों से जो सीखे हैं या आप अपने अनुभव से धन कमाना जानते हैं, वह सब करो, परंतु अपनी आमदनी का 10 से 20 प्रति शत बचत करके इसे बैंक में रखो, तभी आप का जीवन सुखमय बीतेगा ।

आंतरिक बल - 455

-मनोबल द्वारा अमीर बने -51

-बुरी आदतें जो आपकी ज़िन्दगी बर्बाद कर सकती हैं ।

-नशे (शराब) की लत

-एक नशेड़ी इन्सान कभी भी न खुद का भला कर सकता है और न ही अपने परिवार का । नशे का नुकसान यह है कि हम अपनी ज़िन्दगी तो बर्बाद करते ही हैं साथ में अपने परिवार को भी चैन से जीने नहीं देते ।

-नशे में आदमी मार - पीट करता है, नशे के कारण ही चरित्रहानन की घटनाएँ होती हैं । नशे के कारण ही लोग सही ढंग से ड्राइविंग नहीं कर पाते और जान गंवा बैठते हैं । यह नशा ही है जो व्यक्ति अपने माता - पिता को कुछ भी नहीं समझता ।

-इसकी लत लग गयी तो बुरे दिन शुरू हो जाते हैं । इससे बचने का बस एक ही रास्ता है की नशे के बारे में कभी सोचो ही मत, नशा लेना तो दूर की बात है अगर आपका कोई दोस्त या हितेषी आपको शराब या सिगरेट देता है तो उसे किसी भी कीमत में ग्रहण न करे । वरना यह सिगरेट एक दिन आपका धुँआ बना देगी । इसलिए हैप्पी लाइफ चाहिए तो नशे को कह दो अलविदा ।

-चाहे कितना ही धन हो नशेबाज़ उसे खत्म कर देता है ।

-जुए की लत

-दूसरी बड़ी लत है जुएँ की, लाटरी की, सट्टे की । यह ऐसी लत है जिसने आज तक अनंत परिवारों को अमीर से गरीब बना दिया है । इस दुनिया में अगर आपको जीवित रहना है तो आपके पास पैसा होना चाहिए । अगर आपके पास धन नहीं है तो आप यहाँ जी नहीं सकते । फिर भी यह जानते हुए लोग अपनी मेहनत के पैसे को जुएँ में उड़ा देते हैं ।

-जहाँ पैसे का लालच होता है वहाँ आदमी पीछे - पीछे भागता है । ऐसे लोग शार्टकट से पैसा कमाने के चक्कर में बर्बाद हो जाते हैं ।

बुरी संगत

अगर बुरे लोगों की संगत में रहेंगे तो आपका जीवन सदैव घोर संकटों से घिरा रहेगा । यदि जीवन में सुखी रहना चाहते हैं तो बुरे लोगों की संगत में रहने की आदत में सुधार कर लो ।

-अतीत

अगर आप अपने बुरे अतीत को याद करके अपने आप को कोस रहे हैं तो आप कभी आगे नहीं बढ़ पाओगे इसलिए हमेशा वर्तमान में रहो और जियो और भविष्य का प्लान बनाओ

-कड़वी भाषा

-ज्यादातर लोग बात बात में गाली देते रहते हैं । कड़वी भाषा सुनना किसी को पसंद नहीं जिससे लोग आप से दूरी बनाने लगते हैं।

-रिश्तेदारों से बैर रखना

-इस दुनिया में कोई किसी का नहीं सब मतलबी हैं लेकिन जीवन में किसी मोड़ पर आपके रिश्तेदार ही काम आएंगे । पारिवारिक रिश्ते एक ऐसी चीज है जिन्हें आप चाहकर भी नहीं तोड़ सकते क्योंकि आप जन्म से ही रिश्ते से बंधे होते हैं जीवन का सुख लेने के लिए रिश्तेदारों का होना जरूरी है ।

-कई लोग छोटी-छोटी बातों की वजह से रिश्तेदारों से झगड़ा कर लेते हैं और उन को नुकसान पहुंचाने की सोचते हैं ।

-आपको एक बात ध्यान में रखनी चाहिए कि उन को नुकसान पहुंचाने का मतलब खुद को नुकसान पहुंचाना है ।

-किसी भी मामले को प्यार से सुलझाएं

-नाजायज सम्बंध

-विपरीत लिंग के लोगो की तरफ जब कभी ज्यादा झुकाव होने लगे तो यह ऐसी बुरी आदत है जो आपको बर्बाद कर देगी इसे राहू की दशा कहते हैं इसलिए तुरंत अपने आप को चेक करो और परमात्मा को याद करो नहीं तो आप बर्बाद हो जाओगे । घाटी यारी जान का खतरा ।

-जिन घरों में, जिन परिवारों में, इनके मुखिया में विशेषतौर पर और किसी घर के सदस्य में संधारणतय कोई बुरी आदत होती है, उनकी आर्थिक दशा हमेशा बुरी अर्थात कंगाली रहती है ।

-अगर हम भागवान को याद करते रहे और संगदोष का ध्यान रखे तो ऐसी बुरी आदतों से बचे रहेंगे ।

-इन आदतों का मूल कारण है स्नेह की कमी और बात बात पर लताड़ सुनना । इन लोगों को प्यार दो और भागवान की याद में सकाश दो । इन लोगों को बड़े ब...

-मनोबल द्वारा अमीर बने -52

-10% दान देने से धनवान बने

-दुनियां में दान का बहुत महत्व है । परंतु इस के पीछे का विज्ञान क्या है । उसे समझना बहुत ही जरूरी है ।

-आप अपनी चीज किसी को देते हैं तो वही लौट कर आयेगी ।

-ईश्वरीय नियम कहता है, जो चीज आप देते हैं, वह बढ़ कर आप के पास आती ही है, तब ही इस सर्किट की पूर्णता होती है ।

-आज तक जो आप देते हैं वह वापिस मिला है ।

-आप ने अच्छे शब्द दिये तो आप की तरफ अच्छे शब्द लौट कर आये ।

-आप ने दूसरों को प्रेम दिया तो आप को प्रेम मिला ।

-आप ने किसी की मदद की तो आप को मदद मिली ।

-आप ने किसी के लिये प्रार्थना की या साकाश दी तो उसका फल आप को भी मिला ।

-किसी ने किसी को गाली दी तो बदले में आप को गाली ही मिली ।

-जीवन का नियम है जो आप दूसरों को देते हैं वही लौट कर आप के पास आता है ।

-आप शुभ विचार देते हैं तो वे ही विचार आप की तरफ लौट कर आते हैं ।

-ऐसा होता ही है, यह हकीकत है, चाहे आप माने या ना माने, क्योंकि कुदरत के नियम किसी के मानने या ना मानने पर निर्भर नहीं है, वह सत्य हैं और अटल है ।

-आप अपनी ओर से प्रकृति को क्या दे रहे हैं ।

-जब आप कुछ देते हैं, कोई बीज बोते हैं, तभी ही ईश्वर उस बीज को कई गुना बढ़ा देता है, बढ़ाने के लिए उस बीज पर कार्य करता है, उसे वृक्ष बनाता है।

-ईश्वर कहता है तुम मुझे कुछ दो तो मैं उसे बढ़ाने के लिए काम शुरू करू ।

-आप ईश्वर से सफलता, सुविधा, सुरक्षा, प्रेम, आत्मविश्वास, शोहरत, पैसा चाहते हैं मगर बदले में ईश्वर को पहले काम करने के लिए क्या दे रहे हैं।

-बीज जमीन में डाला तो कई गुना बढ़ कर फसल आती है । यह देखकर सभी को खुशी और आश्चर्य होता है। सभी की आंख खुली की खुली रह जाती है । प्रकृति की इस देन को देखकर आनंद महसूस करते हैं ।

-यह सब चमत्कार उच्चतम बीज उच्चतम जमीन उत्तम समय पर डालने से हुआ ।

-आप भी बीज डाल कर विश्वास करो ।

-किसी की सहायता का विचार करो ।

-किसी का दुख सुनो ।

-किसी को समय दो, उसके पास बैठो ।

- किसी की सेवा करें ।

- किसी को पढ़ायें ।

- किसी के विकास के निमित्त बने ।

- किसी को पैसे की मदद करें ।

- किसी की अपनी शक्ति से समस्या सुलझाना ।

- किसी को खाना खिलाना ।

- ये सब ऐसे बीज हैं, जब फलते फूलते हैं तो आप के जीवन में खुशहाली आ जाती है । आप धनवान बन जाते हैं ।

आंतरिक बल -457

- मनोबल द्वारा अमीर बने - 53

- 10% दान देने का महत्व ।

- हरेक व्यक्ति को अपनी आय का कम से कम 10% हर महीने दान के लिये अलग से निकाल कर रख लेना चाहिये ।

- दान नियमित और आदतन होना चाहिये ।

- दान हमारी भौतिक नियामतो के अनुपात में होना चाहिये ।

-हरेक व्यक्ति को उतना दान देना चाहिये जितना उसने अपने दिल में देने का फैसला किया है ।

-दान अनिच्छा और दबाव में नहीं देना चाहिये ।

-खुशी खुशी दान देने से अपने दिल में गर्मजोशी महसूस करेंगे ।

-अपनी प्रतिष्ठा बढ़ाने या दूसरे लोगों के बीच सम्मान पाने के लिये दान नहीं देना चाहिये ।

-यह जो हम दान करते हैं यह वास्तव में हम अपने लिये ही वे सुविधायें उत्पन्न कर रहे हैं जिनके लिये हम दान दे रहे हैं ।

-पौधों को पानी सींचने वाला माली स्वयं के लिये फूलों की सुगंध का आरक्षण कर रहा है । उसे भी सुगंध मिलेगी ।

-दीपक में तेल डालने वाला व्यक्ति स्वयं के लिये प्रकाश सुरक्षित कर रहा है ।

-खुद के सुख को दूसरों तक पहुंचाते रहने वाला सुख को अपने लिये सुरक्षित कर रहा है ।

-दुनिया में ऐसे बहुत से लोग बा संस्थाए हैं, जिन्हें आप की उदारता के कारण सहायता मिल सकती है । इस सहायता से वे बहुत अधिक लोगों का भला कर सकेंगे । अनेक दुखियों की सहायता कर सकेंगे ।

-मुसीबत के समय आप द्वारा दिया गया छोटा सा तोहफा भी जरूरत मंदों का बड़ा काम कर सकता है ।

-जो दानी होते हैं, उन्हें सभी सुख प्राप्त होते हैं ।

-अगर आप शिक्षा का दान देते हैं और इसके लिये स्कूल, कॉलेज, यूनिवर्सिटी खोलते हैं । इस से करोड़ों बच्चों का भविष्य बनता है । पढ़े लिखे लोग क्रांति लाने के निमित्त बनते हैं ।

-शिक्षा के क्षेत्र में दान देने से आप बहुत बुद्धिवान बनेंगे और बुद्धिवान ही धनवान बनता है । बुद्धिहीन व्यक्ति धन को उल्टे कामों में नष्ट कर देता है ।

-अगर आप धर्मशालाओं का निर्माण करने में या गरीब आदमियों को मकान बनाने में दान देते हैं, सहायता देते हैं तो आप को जन्म जन्म, सुंदर महल मिलेगा ।

-अगर आप हस्पताल खोलने में दान देते हैं । बीमार लोगों के इलाज के लिये उनके भोजन के लिये धन दान करते हैं तो आप को निरोगी काया मिलेगी ।

-एक धनी व्यक्ति की पत्नी किसी रोग से पीड़ित थी । बहुत इलाज कराने पर भी ठीक नहीं हुई । किसी ने उसे धर्मार्थ औषधालय खोलने की सलाह दी ।

-उसने औषधालय खोला कुछ समय बाद उसकी पत्नी ठीक हो गई । उस व्यक्ति ने औषधालय बंद कर दिया । उसकी पत्नी को फिर वही रोग हो गया । उसने दुबारा फ्री औषधालय खोल दिया, उसकी पत्नी फिर ठीक हो गई ।

-उस व्यक्ति ने जब जब औषधालय बंद किया उसकी पत्नी बीमार हो जाती । आखिरकार उस ने सदा के लिये औषधालय खोल दिया । उसकी पत्नी आजीवन निरोगी रही ।

-आप गरीबों को रोजी रोटी दिलाने में दान करते हैं आप को कभी भी किसी भी जीवन में अनाज की कमी नहीं आयेगी ।

-आप लोगों के रोटिन कामों में सहयोग करते हैं, सेवा करते हैं, दान करते हैं तो आप राजा बनेंगे ।

आज के राजा और कुछ नहीं ये भटके हुये संत हैं । जिन्हें सर्व सुख अतिइंद्रिय सुख तो नहीं मिला भगवान ने उन्हें शणिक सुखों के लिये राजा बना दिया है क्योंकि उन्होंने पिछले जन्म लोगों की सेवा की है ।

-इसलिये हर व्यक्ति को सेवा के लिये कुछ दान जरूर करना चाहिये ।

-जितना गुड उतना मीठा । जितनी सेवा उतनी मेवा । कर भला हो भला । सेवा बिना मेवा नहीं । ऐसे सुंदर वाक्य मन रिपीट करते रहा करो ।

आंतरिक बल - 458

-मनोबल द्वारा अमीर बने -54

-विशेषताओं द्वारा दान

-आमतौर पर दान का अर्थ यह समझते हैं कि कोई स्थूल चीज जैसे किसी को धन दिया जाये, भोजन दिया जाये कपड़े दिये जाये, दवाइयां दी जाये, कोई साइकल, स्कूटर दिया जाये, कोई घर दिया जाये तो यह दान है ।

-दान का यह संकुचित अर्थ है ।

-स्थूल सुविधाओं का दान एक सीमा तक किया जा सकता है ।

-स्थूल उपहारों से दान लेने वाले का सदा काम नहीं चलता ।

-इस दान का भी महत्व है परंतु हमें सूक्ष्म दान भी करते रहना चाहिये ।

-सूर्य हर समय सभी जीवों को धरती को प्रकाश दान देता रहता है ।

-नदियां सदा खेतों को जल दान देती रहती हैं ।

-पेड़ पौधे मनुष्य को आक्सीजन हर समय दान देते रहते हैं और बदले में मनुष्य पेड़ों को कार्बनडायाऑक्साइड गैस देते रहते हैं ।

-अगर विश्व को स्वर्ग बनाना है तो अपनी विशेषताओं का 10% दान करते रहो ।

-अगर आप वकील है तो 10% जरूरतमंद लोगों से फीस नहीं लो ।

-अगर आप व्यापारी है तो 10% गरीब लोगों से अपना प्रॉफिट मत लो । अगर हो सके तो उन्हें फ्री में समान दो ।

-अगर आप डॉक्टर है तो 10% लोगों का फ्री में इलाज करो ।

-अगर आप टीचर है तो 10% गरीब बच्चों को फ्री में पढ़ाओ ।

-आप दर्जी है तो 10% गरीबों से नाम मात्र खर्च लो ।

-आप कपड़ा व्यापारी है तो 10% गरीबों को सस्ता और बढ़िया कपड़ा दो ।

-कई लोग समस्याओं में उलझ रहे होते है तो ऐसे लोगों को 10% ज्यादा समय दो और उन्हें समस्या से बाहर निकलने में मदद करो ।

-अगर आप किसी क्षेत्र में एक्सपर्ट है तो 10% जरूरत मंद लोगों की उस क्षेत्र में मार्ग दर्शन करो ।

-अगर आप योगी है तो विश्व के लिये 10% ज्यादा योग लगाओ ।

-आप अपनी अनुभूति बढ़ाने के लिये 10% ज्यादा बुक्स पढो ।

-आप 10% ज्यादा मन से सभी को समझाया करो ।

-मनोबल द्वारा आमीर बने -55

-स्वयं को 10% दान दो

-जब हम हवाई उड़ान पर होते हैं तो हमें एक अनाउन्समेंट सुनाई देती है कि आप की यात्रा मंगलमय हो। फिर भी अगर कोई अनहोनी हो जाये तो आप की सीट के साथ लगा ऑक्सिजन का सिलेन्डर सब से पहले अपने को लगायें। अगर आप पहले पड़ोसी को सिलेंडर लगाने लगे तो आप और वह दोनों मर सकते हैं। पहले अपना जीवन बचायें। फिर दूसरे का बचा सकेंगे।

-आज दुनिया में हम दूसरे लोगों को बचाने में लगे हुये हैं, लोगों को दान देते हैं और खुद मानसिक पीड़ाओं से परेशान हैं, धन की कमी है, खुद गरीब हैं। हम दूसरों को आक्सीजन लगा रहे हैं जब कि पहले खुद को आक्सीजन लगानी थी अर्थात पहले खुद को दान देना है अर्थात जब हम खुद सुखी होंगे तभी दूसरों को सुखी बना सकेंगे।

-शरीर में सिर महत्वपूर्ण है, इसलिये अपने दिमाग को विकसित करने के लिये अपनी कमाई का 10% धन का दान स्वयं को दो।

-अपने दिमाग को विकसित करने के लिये अपने हर घंटे का 10% समय अपने को दान में दें। हर घंटे में 5 मिनट ध्यान का अभ्यास करो अगर ध्यान नहीं लगाना आता या नहीं लगता तो 5 मिनट स्वप्रेरित पुस्तकें पढो।

-सेहत है तो जहान है। इसलिये 10% समय स्वास्थ्य पत्रिका पढ़ने में भी हर रोज लगाना है।

-10% समय का मतलब है कम से कम 5 मिनट एक दिन में। अगर हो सके तो हर घंटे 5 मिनट।

-10% समय अपनी लौकिक शिक्षा अर्थात डिग्री लेने में लगाओ । अगर आप की उम्र ज्यादा हो गई है और लौकिक सर्विस से रिटायर हो चुके हैं तब भी कॉम्पटीशन सक्सेस रीव्यू जैसी पत्रिका 5 मिनिट जरूर पढ़ें । इस से एक तो आप जेनरेशन गैप से बचे रहेंगे । दूसरा अगले जन्म आप आई ए एस जैसी परीक्षायें आसानी से पास कर सकेंगे ।

-सभी समस्याओं का मूल कारण है व्यवहार की कमी । 10 % समय का दान व्यवहार कला की पुस्तकें पढ़ने पर दो ।

-अमीर कैसे बने विषय पर पुस्तकें पढ़ने पर 10% समय खुद को दान दो । ये पुस्तकें हमें बदलते समय के साथ धनी बने रहने के अच्छे अच्छे सुझाव देती रहती हैं ।

-10% का अधिक समय आत्मा, परमात्मा के विषय पढ़ने के लिये स्वयं को दान दें ।

-कड़े संस्कारों को बदलने के लिये 10% समय अधिक ध्यान साधना में लगाये या कड़े संस्कार पर पुस्तकें पढ़ें ।

-जो पुस्तकें आज तक आप नहीं पढ़ सके उन पुस्तकों को पढ़ने के लिये 5 मिनिट अर्थात 10% समय स्वयं को दान में दो ।

--लोगों के साथ टकराव से बचने लिये 10% समय कल्याण कार्यों में ज्यादा लगाये ।

जिन लोगों से टकराव होता है उनके सामने जाने से पहले बाबा को याद करो या मनोबल को बढ़ाने वाली कोई पुस्तक पढ़ कर जाओ ।

-आमतौर पर व्यक्ति दूसरों को समझाने में व्यस्त रहते हैं । 10% समय अपने को ज्यादा समझदार बनाने में लगाये । जिन समस्याओं पर आप को समझाना पड़ता है, उन पर 5 मिनिट जरूर पढ़ा करो चाहे आप कितनी भी महान दीदी हैं या वरिष्ठ भाई हैं । नहीं तो पतन हावी हो जायेगा ।

-अपने को तंदरुस्त रखने के लिये 5 मिनिट अर्थात 10% समय सैर करने के लिये स्वयं को दान दें । अगर आप की आयु 40 वर्ष हो गई है तो सैर को गुरुद्वारे का प्रसाद या क्लास की मुरली समझ

कर जरूर करो नहीं तो शरीर आप को बैक गेयर लगा देगा । हमारा ऊपर जाने का प्रोग्राम जल्दी बन जायेगा और यह संसार ऐसे ही चलता रहेगा जिसकी चिंता में हम सेहत गंवा बैठे ।

-10% समय महापुरुषों की जीवनी पढ़ने में लगाये ताकि आप बुधिवान और दुनिया के लिये आदर्श बन सकें ।

-10% समय हर रोज कुछ नया पढ़ने में लगाये जो आप ने कभी नहीं पढ़ा वा जाना है । दिमाग की विशेषता है यह हर दिन कुछ नयापन चाहता है ।

-10%' ज्यादा समय अपने सम्बंधों को श्रेष्ठ बनाने में लगाये । जिन लोगों से कुछ खटास है उनको मधुर कैसे बनाये, उसकी युक्ति पढ़ने से ही मिलेगी ।

-10% समय अपने सुधार के लिये भगवान को हर रोज दे । इस समय में सिर्फ भगवान से बात करें कोई गिला छिकबा नहीं करना, अपने दुखड़े नहीं रोना । विधि बड़ी सहज है जो भी आप का ईष्ट है उसकी फोटो अपने सामने रख लो और उस से ऐसे बातें करो जैसे मातायें न्यूली बोरन बेबी से एक तरफा बातें करती रहती है । ब्रह्मांड के नियम अनुसार आप के इष्ट की आत्मा वह जहां कहीं भी निवास करती है आप के विचार उसको पहुंच रहे हैं ।

-अपने विकास के लिये अमृतवेले 10% का ज्यादा समय अपने को दान दें ।

-ये अनोखा दान आप को जन्म जन्मांतर के लिये धनवान बना देगा ।